॥ श्रीहरिः ॥

109

श्रीगोस्वामीतुलसीदासजीरचित

रामाज्ञा-प्रश्न

(सरल भावार्थसहित)



गीताप्रेस, गोरखपुर

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस —पो० गीताप्रेस website : www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org	© (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स २३३६९९७
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	© (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	© (०३३) २२६८६८९४; फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाईन्स स्टेशनके पास	© (०२२) २२०३०७१७
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	© (०५१२) २३५२३५१; फैक्स २३५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	© (०६१२) २३००३२५
राँची-८३४००१	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	© (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड e-mail: suratdukan@gitapress.org	© (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
इन्दौर-४५२००१	जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	© (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७
जलगाँव-४२५००१	७, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	© (०२५७) २२२६३९३
हैदराबाद-५०००९५	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	© (०४०) २४७५८३११
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	© (०७१२) २७३४३५४
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	© (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक	© (०७७१) ४०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	© (०५४२) २४१३५५१
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	© (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम e-mail:gitabhawan@gitapress.org	© (०१३५) २४३०१२२, २४३२७९२
कोयम्बटूर-६४१०१८	गीताप्रेस मेंशन, ८/१ एम, रेसकोर्स	© (०४२२) ३२०२५२१
बेंगलोर-५६००२७	१५, फोर्थ 'इ' क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड	© (०८०) २२९५५१९०, ३२४०८१२४

स्टेशन-स्टाल— **दिल्ली** (प्लेटफार्म नं० १२); **नयी दिल्ली** (नं० १२-१३); **हजरत निजामुद्दीन** [दिल्ली] (नं० ४-५); **कोटा** [राजस्थान] (नं० १); **बीकानेर** (नं० १); **गोरखपुर** (नं० १); **कानपुर** (नं० १); **लखनऊ** [एन० ई० रेलवे]; **वाराणसी** (नं० ४-५); **मुगलसराय** (नं० ३-४); **हरिद्वार** (नं० १); **पटना** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं० १); **धनबाद** (नं० २-३); **मुजफ्फरपुर** (नं० १); **समस्तीपुर** (नं० २); **हावड़ा** (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); **कोलकाता** (नं० १); **सियालदा मेन** (नं० ८); **आसनसोल** (नं० ५); **कटक** (नं० १); **भुवनेश्वर** (नं० १); **औरंगाबाद** [महाराष्ट्र] (नं० १); **सिकन्दराबाद** [आं० प्र०] (नं० १); **गुवाहाटी** (नं० १); **खड़गपुर** (नं० १-२); **रायपुर** [छत्तीसगढ़] (नं० १); **बेंगलोर** (नं० १); **यशवन्तपुर** (नं० ६); **श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम्** [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० १) एवं **अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।**

फुटकर पुस्तक-दूकानें

चूरू-३३१००१	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क	© (०१५६२) २५२६७४
ऋषिकेश-२४९१९२	**मुनिकी रेती**	
तिरुपति-५१७५०४	शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, तिरुमलाई हिल्स	
बेरहामपुर-७४२१०१	म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, ब्लाक-बी, शॉप नं० ५७—६०, प्रथम तल, के० एन० रोड (मुर्शिदाबाद)	

ISBN 81-293-0501-1
9788129305015
Code 109

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीरचित

रामाज्ञा-प्रश्न

(सरल भावार्थसहित)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अनुवादक—

श्रीसुदर्शनसिंह

सं० २०६६ छब्बीसवाँ पुनर्मुद्रण ४,०००
कुल मुद्रण २,५४,५००

❖ मूल्य—८ रु०
(आठ रुपये)

ISBN 81-293-0501-1

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : booksales@gitapress.org website : www.gitapress.org

पुस्तक-परिचय

कहा जाता है कि गोस्वामी तुलसीदासजीने अपने परिचित गंगाराम ज्योतिषीके लिये इस रामाज्ञा-प्रश्नकी रचना की थी। गंगाराम ज्योतिषी काशीमें प्रह्लादघाटपर रहते थे। वे प्रतिदिन सायंकाल श्रीगोस्वामीजीके साथ ही संध्या करने गङ्गातटपर जाया करते थे। एक दिन गोस्वामीजी संध्या-समय उनके द्वारपर आये तो गंगारामजीने कहा—'आप पधारें, मैं आज गङ्गा-किनारे नहीं जा सकूँगा।'

गोस्वामीजीने पूछा—'आप बहुत उदास दीखते हैं, कारण क्या है?'

ज्योतिषीजीने बतलाया—'राजघाटपर जो गढ़बार-वंशीय नरेश हैं,* उनके राजकुमार आखेटके लिये गये थे, किन्तु लौटे नहीं। समाचार मिला है कि आखेटमें जो लोग गये थे, उनमेंसे एकको बाघने मार दिया है। राजाने मुझे आज बुलाया था। मुझसे पूछा गया कि उनका पुत्र सकुशल है या नहीं, किंन्तु यह बात राजाओंकी ठहरी, कहा गया है कि उत्तर ठीक निकला तो भारी पुरस्कार मिलेगा अन्यथा प्राणदण्ड दिया जायगा। मैं एक दिनका समय माँगकर घर आ गया हूँ, किन्तु मेरा ज्योतिष-ज्ञान इतना नहीं कि निश्चयात्मक उत्तर दे सकूँ। पता नहीं कल क्या होगा।'

दु:खी ब्राह्मणपर गोस्वामीजीको दया आ गयी। उन्होंने कहा—'आप चिन्ता न करें। श्रीरघुनाथजी सब मङ्गल करेंगे।'

आश्वासन मिलनेपर गंगारामजी गोस्वामीजीके साथ संध्या करने गये। संध्या करके लौटनेपर गोस्वामीजी यह ग्रन्थ

* इनके वंशज अब माँडाके राजा हैं।

लिखने बैठ गये। उस समय उनके पास स्याही नहीं थी। कत्था घोलकर सरकण्डेकी कलमसे ६ घंटेमें यह ग्रन्थ गोस्वामीजीने लिखा और गंगारामजीको दे दिया।

दूसरे दिन ज्योतिषी गंगारामजी राजाके समीप गये। ग्रन्थसे शकुन देखकर उन्होंने बता दिया—'राजकुमार सकुशल हैं।'

राजकुमार सकुशल थे। उनके किसी साथीको बाघने मारा था, किन्तु राजकुमारके लौटनेतक राजाने गंगारामको बन्दीगृहमें बन्द रखा। जब राजकुमार घर लौट आये, तब राजाने ज्योतिषी गंगारामको कारागारसे छोड़ा, क्षमा माँगी और बहुत अधिक सम्पत्ति दी। वह सब धन गंगारामजीने गोस्वामीजीके चरणोंमें लाकर रख दिया। गोस्वामीजीको धनका क्या करना था, किन्तु गंगारामका बहुत अधिक आग्रह देखकर उनके सन्तोषके लिये दस हजार रुपये उसमेंसे लेकर उनसे हनुमान्‌जीके दस मन्दिर गोस्वामीजीने बनवाये। उन मन्दिरोंमें दक्षिणाभिमुख हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ हैं।

यह ग्रन्थ सात सर्गोंमें समाप्त हुआ है। प्रत्येक सर्गमें सात-सात सप्तक हैं और प्रत्येक सप्तकमें सात-सात दोहे हैं। इसमें श्रीरामचरितमानसकी कथा वर्णित है; किन्तु क्रम भिन्न हैं। प्रथम सर्ग तथा चतुर्थ सर्गमें बालकाण्डकी कथा है। द्वितीय सर्गमें अयोध्याकाण्ड तथा कुछ अरण्यकाण्डकी भी। तृतीय सर्गमें अरण्यकाण्ड तथा किष्किन्धाकाण्डकी कथा है। पञ्चम सर्गमें सुन्दरकाण्ड तथा लंकाकाण्डकी, षष्ठ सर्गमें राज्याभिषेककी कथा तथा कुछ अन्य कथाएँ हैं। सप्तम सर्गमें स्फुट दोहे हैं और शकुन देखनेकी विधि है।

शकुन-विचारकी विधि

इसी ग्रन्थके सप्तम सर्गके सातवें सप्तकमें गोस्वामी तुलसीदासजीने स्वयं प्रश्नका उत्तर निकालनेकी विधि दी है। वह विधि यह है—

किसी अच्छे दिन सायंकाल ग्रन्थको निमन्त्रण देना चाहिये। अर्थात् सायंकाल अच्छे आसनपर ग्रन्थको रखकर प्रार्थना करनी चाहिये—'कल मैं आपसे कुछ आवश्यक बात जाननेकी इच्छा करूँगा। मुझपर अनुग्रह करके सत्य फल सूचित करनेकी कृपा करें।'

अष्टोत्तर सत कमल फल मुष्टी तीन प्रमान।
सप्त सप्त तजि सेषको राखै सब बिलगान॥
प्रथम सर्ग जो शेष रह, दूजे सप्तक होइ।
तीजे दोहा जानिये, सगुन बिचारब सोइ॥

दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान-सन्ध्यादि नित्यकर्म करके पुस्तककी पुष्प, चन्दन, धूप-दीप आदिसे पहले पूजा करनी चाहिये। फिर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पहले गुरुदेव, गणेशजी, शिव-पार्वती, श्रीसीता-राम, लक्ष्मण और हनुमान्‌का स्मरण करके जो प्रश्न करना हो, वह प्रश्न करके १०८ कमलगट्टे (कमलके पके फल) अञ्जलिमें लेकर ग्रन्थके पास सामने रख दें। फिर उसमेंसे एक-एक करके तीन मुट्ठी कमलगट्टे उठायें और उनको अलग-अलग रखते जायँ। पहली बारकी मुट्ठीके कमलगट्टोंको गिनकर उस संख्यामें सातका भाग दें। भाग देनेपर जो बाकी बचे, उसे ग्रन्थके सर्गकी संख्या समझें। यदि कुछ बाकी न बचे तो ग्रन्थका सातवाँ सर्ग

समझें। इसी प्रकार दूसरी मुट्ठीके कमलगट्टे गिनकर उनकी संख्यामें सातका भाग दें और जो शेष बचे उसे पहले आये हुए सर्गके सप्तककी संख्या समझें और कुछ शेष न बचे तो उस सर्गका सातवाँ सप्तक समझें। अब तीसरी मुट्ठीके कमलगट्टोंको गिनकर सातका भाग उस संख्यामें दें। जो शेष बचे, वह उस ज्ञात सप्तकके दोहेकी संख्या है। यदि कुछ न बचे तो उस सप्तकका सातवाँ दोहा समझें। अब ग्रन्थ खोलकर उस सर्गके उस सप्तकका वह दोहा देख लें और दोहेके अनुसार अपने प्रश्नका फल समझ लें।

उदाहरणके लिये पहली मुट्ठीके कमलगट्टे गिने तो १७ निकले, उनमें सातका भाग देनेसे ३ बचा, यह ग्रन्थके तीसरे सर्गकी सूचना हुई। दूसरी मुट्ठीके कमलगट्टे गिननेपर २५ निकले। इसमें सातका भाग देनेसे चार बचा, यह सप्तककी सूचना हुई। तीसरी मुट्ठीके कमलगट्टे गिननेपर २७ निकले। इस संख्यामें सातका भाग दिया तो ६ शेष रहा जो दोहेकी संख्या है। अब ग्रन्थमें तीसरे सर्गके चौथे सप्तकका छठा दोहा देखा तो वह दोहा निकला—

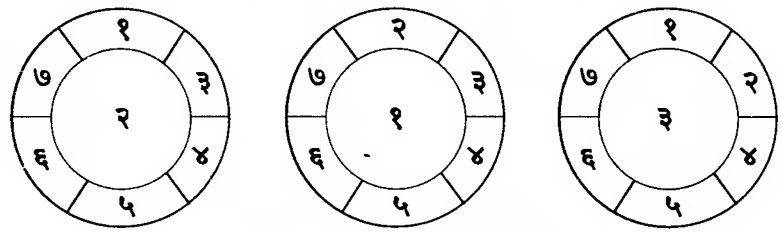
लखन ललित मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह।
सुख संपति कीरति बिजय सगुन सुमंगल गेह॥

इसका तात्पर्य है कि यदि प्रश्न सुख, सम्पत्ति, कीर्ति या विजयके सम्बन्धमें है तो लक्ष्मणजीका स्मरण करके कार्य आरम्भ करो, सफलता प्राप्त होगी।

दूसरी विधि

प्रथम द्वितीय तृतीय

१ २ ३



ऊपर ये तीन चक्र दिये हैं, जिनमेंसे प्रत्येकमें सात अङ्क हैं। तीनों चक्रोंमें एक-एक बार अँगुली रखो। प्रथम चक्रमें जिस अङ्कपर अँगुली पड़े, वह सर्गकी संख्या है, द्वितीय चक्रमें जिस अङ्कपर अँगुली पड़े, वह सप्तककी संख्या है और तृतीय चक्रमें जिस अङ्कपर अँगुली पड़े, वह दोहेकी संख्या है।

उदाहरणके लिये प्रथम चक्रमें ४ पर, द्वितीयमें ६ पर और तृतीयमें ७ पर अँगुली पड़ी। अब ग्रन्थमें चतुर्थ सर्गके छठे सप्तकका सातवाँ दोहा देखा। वह दोहा है—

सनमाने आने सदन पूजे अति अनुराग।
तुलसी मंगल सगुन सुभ भूरि भलाई भाग॥

इसका तात्पर्य है कि यदि किसी मङ्गल-विषयमें प्रश्न है तो फल शुभ होगा।

विशेष बात

एक दिनमें तीनसे अधिक प्रश्न नहीं करना चाहिये और एक प्रश्न केवल एक बार ही करना चाहिये। प्रश्न जिस प्रकारका है, दोहा उसी प्रकारका निकले तो कार्यमें सफलता समझनी चाहिये। दोहेमें अशुभकी सूचना हो तो वह कार्य सफल नहीं होगा या उससे कष्ट होगा, यह समझना चाहिये। किंतु आप जिस विषयमें प्रश्न कर रहे हैं, दोहा उस विषयका न निकलकर उससे सर्वथा भिन्न विषयका निकले तो फल संदिग्ध समझना चाहिये। जैसे आपका प्रश्न तो है कि युद्ध या मुकदमेमें विजय होगी या नहीं और दोहा निकलता है—

एक बितान बिबाहि सब सुवन सुमंगल रूप।
तुलसी सहित समाज सुख सुकृत सिंधु दोउ भूप॥

ऐसी दशामें दोहा परम मङ्गलसूचक होनेपर भी प्रश्नसे सम्बन्धित न होनेके कारण प्रश्नका परिणाम संदिग्ध है, यह सूचना देता है।

नोट—किस प्रकारका प्रश्न किस दिन करना चाहिये, यह बात इसी ग्रन्थमें सप्तम सर्गके पहले और दूसरे सप्तकमें देखें।

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः

रामाज्ञा-प्रश्न

प्रथम सर्ग

सप्तक—१

बानि बिनायकु अंब रबि गुरु हर रमा रमेस।
सुमिरि करहु सब काज सुभ, मंगल देस बिदेस॥ १॥

भगवती सरस्वती, श्रीगणेशजी, श्रीपार्वतीजी, श्रीसूर्यभगवान्, गुरुदेव, भगवान् शङ्कर, भगवती लक्ष्मी और भगवान् नारायणका स्मरण करके सभी शुभ-कार्य करो, स्वदेश और विदेशमें सब कहीं कल्याण होगा॥ १॥ (शुभ-कार्य-सम्बन्धी प्रश्न है तो सफलता मिलेगी।)

गुरु सरसइ सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुरगाइ।
सुमिरि चलहु मग मुदित मन, होइहि सुकृत सहाइ॥ २॥

गुरुदेव, सरस्वती देवी, गणेशजी, चन्द्रमा, गङ्गाजी और कामधेनुका स्मरण करके मार्गमें प्रसन्न मनसे चलो, (तुम्हारे) पुण्य सहायक होंगे॥ २॥ (यात्रासम्बन्धी प्रश्न हो तो यात्रा सफल होगी।)

गिरा गौरि गुरु गनप हर मंगल मंगल मूल।
सुमिरत करतल सिद्धि सब, होइ ईस अनुकूल॥ ३॥

श्रीसरस्वतीजी, पार्वतीजी, गुरुदेव, गणेशजी, शङ्करजी और मङ्गलके दाता मंगल (ग्रह) का स्मरण करनेसे दैव अनुकूल हो जाता है और सब सिद्धियाँ हाथमें आ जाती हैं॥ ३॥ (सभी प्रकारके कार्योंमें सफलता होगी।)

भरत भारती रिपु दवनु गुरु गनेस बुधवार।
सुमिरत सुलभ सुधर्म फल, बिद्या बिनय बिचार॥ ४॥

श्रीभरतलाल, सरस्वती देवी, शत्रुघ्नकुमार, गुरुदेव, गणेशजी और बुधवार (के देवता बुध) का स्मरण करनेसे उत्तम धर्मका फल, विद्या, विनय तथा विचार सुलभ हो जाते हैं॥ ४॥ (यदि अध्ययन, धर्मकार्य, शास्त्र-चर्चासम्बन्धी प्रश्न है तो सफलता होगी।)

सुरगुरु गुरु सिय राम गन राउ गिरा उर आनि।
जो कछु करिय सो होय सुभ, खुलहिं सुमंगल खानि॥ ५॥

देवगुरु बृहस्पतिजी, गुरुदेव, श्रीजानकीजी, श्रीरामजी, गणेशजी और सरस्वती देवीका हृदयमें ध्यान करके जो कुछ किया जाता है, परिणाम शुभ होता है और सुमङ्गलकी खानें खुल जाती हैं (बराबर कल्याण ही होता रहता है।) ॥ ५॥ (सभी प्रकारके प्रश्नोंके लिये सफलता सूचित होती है।)

सुक्र सुमिरि गुरु सारदा गनपु लखनु हनुमान।
करिय काजु सब साजु भल, निपटहिं नीक निदान॥ ६॥

दैत्यगुरु शुक्र, गुरुदेव, सरस्वती देवी, गणेशजी, लक्ष्मणजी और हनुमान्‌जीका स्मरण करके सब काम करना चाहिये, इससे सारी व्यवस्था ठीक हो जायगी और परिणाम भी अत्यन्त सुन्दर होगा॥ ६॥ (सभी प्रकारके कार्योंमें सफलता होगी।)

तुलसी तुलसी राम सिय, सुमिरि लखनु हनुमान।
काजु बिचारेहु सो करहु, दिनु दिनु बड़ कल्यान॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि तुलसी (पौधे), श्रीराम, जानकीजी, श्रीलक्ष्मणजी और हनुमान्‌जीका स्मरण करके जो कार्य सोचा है, उसे करो। दिनोंदिन बड़ा कल्याण होगा॥ ७॥ (सभी प्रकारके कार्योंमें सफलता होगी।)

सप्तक—२

दसरथ राज न ईति भय, नहिं दुख दुरित दुकाल।
प्रमुदित प्रजा प्रसन्न सब, सब सुख सदा सुकाल॥ १॥

महाराज दशरथके राज्यमें न ईति (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी, चूहे तथा सुग्गोंके उपद्रव तथा शत्रु राजाओंके आक्रमण) का भय था, न दुःख, पाप या अकालका ही भय था। सारी प्रजा प्रसन्न थी, सब प्रकारका सुख था, सदा सुकाल (सुभिक्ष) रहता था॥ १॥ (यदि प्रश्न किसी भय या रोगनिवृत्तिके सम्बन्धमें है तो वह भय या रोग दूर होगा।)

कौसल्या पद नाइ सिर, सुमिरि सुमित्रा पाय।
करहु काज मंगल कुसल, बिधि हरि संभु सहाय॥ २॥

श्रीकौसल्याजीके चरणोंमें मस्तक झुकाकर और सुमित्राजीके चरणोंका स्मरण करके काम करो, आनन्द-मङ्गल होगा। ब्रह्मा, विष्णु और शङ्करजी सहायक होंगे॥ २॥ (सभी कार्योंमें सफलता होगी।)

बिधिबस बन मृगया फिरत दीन्ह अन्ध मुनि साप।
सो सुनि बिपति बिषाद बड़, प्रजहिं सोक संताप॥ ३॥

(महाराज दशरथको) दैववश वनमें आखेटके लिये घूमते समय अन्धे मुनिने शाप दे दिया। उसे सुनकर प्रजाको बड़ी विपत्तिका बोध हुआ, महान् दुःख, शोक और सन्ताप हुआ॥ ३॥ (प्रश्न-फल अनिष्टकी सूचना देता है।)

सुतहित बिनती कीन्ह नृप, कुलगुरु कहा उपाउ।
होइहि भल संतान सुनि प्रमुदित कोसल राउ॥ ४॥

महाराज दशरथने पुत्रप्राप्तिके लिये प्रार्थना की, कुलगुरु वसिष्ठजीने उसका उपाय बतलाया [और कहा—] 'अच्छी सन्तान उत्पन्न होगी।' यह सुनकर महाराज दशरथ अत्यन्त प्रसन्न हुए॥ ४॥ (सन्तान-प्राप्तिसम्बन्धी प्रश्न है तो सफलता होगी।)

पुत्र जागु करवाइ रिषि राजहि दीन्ह प्रसाद।
सकल सुमंगल मूल जग भूसुर आसिरबाद॥ ५॥

महर्षि वसिष्ठजीने पुत्रेष्टि-यज्ञ कराकर महाराजको प्रसाद दिया। ब्राह्मणोंका आशीर्वाद संसारमें सभी श्रेष्ठ मङ्गलोंका मूल (देनेवाला) है॥ ५॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

राम जनम घर घर अवध मंगल गान निसान।
सगुन सुहावन होइ सत मंगल मोद निधान॥ ६॥

श्रीरामका जन्म (अवतार) होनेपर अयोध्याके प्रत्येक घरमें मङ्गलगीत गाये जाने लगे, नौबत बजने लगी। यह शकुन शुभदायक है, कल्याण एवं प्रसन्नताका निधान पुत्र होगा॥ ६॥

राम भरतु सानुज लखन दसरथ बालक चारि।
तुलसी सुमिरत सगुन सुभ मंगल कहब पचारि॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि महाराज दशरथके चारों कुमार श्रीराम, भरत, शत्रुघ्न तथा लक्ष्मणका स्मरण करनेसे शुभ-शकुन और मङ्गल होता है, यह मैं घोषणा करके कह देता हूँ॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—३

भूप भवन भाइन्ह सहित रघुबर बाल बिनोद।
सुमिरत सब कल्यान जग, पग पग मंगल मोद॥ १॥

महाराज दशरथके राजभवनमें भाइयोंके साथ श्रीराम बालक्रीड़ा करते हैं। इसका स्मरण करनेसे संसारमें सब प्रकार कल्याण होता है और पद-पदपर (सर्वदा) मङ्गल एवं आनन्द होता है॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

करन बेध चूड़ा करन, श्रीरघुबर उपबीत।
समय सकल कल्यानमय, मंजुल मंगल गीत॥ २॥

श्रीरघुनाथजीके कर्णवेध-संस्कार, मुण्डन-संस्कार और यज्ञोपवीत-संस्कारके समय समस्त कल्याणमय सुन्दर मङ्गल-गीत गाये गये॥ २॥ (कर्ण-वेध, यज्ञोपवीतादि संस्कारोंसे सम्बन्धित प्रश्न है तो फल शुभ होगा।)

भरत सत्रुसूदन लखन सहित सुमिरि रघुनाथ।
करहु काज सुभ साज सब, मिलहिं सुमंगल साथ॥ ३॥

श्रीभरतजी, शत्रुघ्नकुमार और लक्ष्मणलालके साथ श्रीरघुनाथजीका स्मरण करके काम करो, सभी संयोग उत्तम मिलेंगे, कल्याणकारी साथी प्राप्त होंगे॥ ३॥

राम लखनु कौसिक सहित सुमिरहु करहु पयान।
लच्छि लाभ जय जगत जसु, मंगल सगुन प्रमान॥ ४॥

श्रीराम-लक्ष्मणका विश्वामित्रजीके साथ स्मरण करके यात्रा करो। संसारमें सुयश, विजय तथा धनकी प्राप्ति होगी। यह प्रामाणिक मङ्गल शकुन है॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

मुनिमखपाल कृपाल प्रभु चरनकमल उर आनु।
तजहु सोच, संकट मिटिहि, सत्य सगुन जियँ जानु॥ ५॥

मुनि विश्वामित्रजीके यज्ञकी रक्षा करनेवाले प्रभु श्रीरामके चरण-कमलको हृदयमें ले आओ, चिन्ता छोड़ दो, संकट दूर हो जायगा। इस शकुनको चित्तमें सत्य समझो॥ ५॥ (विपत्तिके दूर होनेके सम्बन्धमें प्रश्न है तो वह दूर होगी।)

हानि मीचु दारिद दुरित आदि अंत गत बीच।
राम बिमुख अघ आपने गये निसाचर नीच॥ ६॥

श्रीरामसे विमुख होनेपर आदि, अन्त और मध्य—सभी दशामें हानि, मौत, दरिद्रता तथा कष्ट है। (देख लो) श्रीरामसे विमुख नीच राक्षस अपने ही पापसे नष्ट हो गये॥ ६॥ (प्रश्न-फल अनिष्ट-सूचक है।)

सिला साप मोचन चरन सुमिरहु तुलसीदास।
तजहु सोच, संकट मिटिहि, पूजिहि मन कै आस॥ ७॥

शिलारूप अहल्याके शापको छुड़ानेवाले (श्रीरघुनाथजीके) चरणोंका स्मरण करो। तुलसीदासजी कहते हैं कि चिन्ता छोड़ दो, संकट दूर हो जायगा और मनकी अभिलाषा पूरी होगी॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—४

सीय स्वयंबर समउ भल, सगुन साध सब काज।
कीरति बिजय बिबाह बिधि, सकल सुमंगल साज॥ १॥

श्रीजानकीजीके स्वयंवरका समय उत्तम है, यह शकुन सब कार्योंको सिद्ध करनेवाला है। कीर्ति, विजय तथा विवाह आदि कार्योंमें सब प्रकारके मङ्गलमय संयोग उपस्थित होंगे॥ १॥

राजत राज समाज महँ राम भंजि भव चाप।
सगुन सुहावन, लाभ बड़, जय पर सभा प्रताप॥ २॥

राजाओंके समाजमें शङ्करजीके धनुषको तोड़कर श्रीराम सुशोभित हैं। यह शकुन सुहावना है, बड़ा लाभ होगा, दूसरेकी सभामें विजय तथा प्रतापकी प्राप्ति होगी॥ २॥

लाभ मोद मंगल अवधि सिय रघुबीर बिबाहु।
सकल सिद्धि दायक समउ सुभ सब काज उछाहु॥ ३॥

श्रीसीता-रामजीका विवाह लाभ तथा आनन्द-मङ्गलकी सीमा है। यह समय बड़ा शुभ तथा सभी सिद्धियोंको देनेवाला है, सभी कार्योंमें उत्साह रहेगा॥ ३॥

कोसल पालक बाल उर सिय मेली जयमाल।
समउ सुहावन सगुन भल, मुद मंगल सब काज॥ ४॥

श्रीअयोध्यानरेश (महाराज दशरथ) के कुमार (श्रीराम) के गलेमें श्रीजानकीजीने जयमाला डाल दी। यह समय शुभ है, शकुन उत्तम है, सब कार्योंमें आनन्द और भलाई होगी॥ ४॥

हरषि बिबुध बरषहिं सुमन, मंगल गान निसान।
जय जय रबिकुल कमल रबि मंगल मोद निधान॥ ५॥

देवता प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं, मङ्गलगीत गाये जा रहे हैं, नगारे बज रहे हैं, सूर्यकुलरूपी कमल (को प्रफुल्लित करने) के लिये सूर्यके समान आनन्द और मङ्गलके निधान श्रीरामजीकी जय हो! जय हो!॥ ५॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सतानंद पठये जनक दसरथ सहित समाज।
आये तिरहुत सगुन सुभ, भये सिद्ध सब काज॥ ६॥

महाराज जनकजीने अपने कुलपुरोहित शतानन्दजीको (अयोध्या) भेजा, महाराज दशरथ बरातके साथ जनकपुर आये। (उनके) सभी कार्य सिद्ध हुए। यह शकुन शुभ है॥ ६॥

दसरथ पूरन परम बिधु, उदित समय संजोग।
जनक नगर सर कुमुदगन, तुलसी प्रमुदित लोग॥ ७॥

तुलसीदास कहते हैं कि इस (शुभ) समय (श्रीराम-विवाह) का संयोग आनेसे (जनकपुरमें) महाराज दशरथरूपी पूर्ण चन्द्रका उदय हुआ है। इससे जनकपुररूपी सरोवरके कुमुदपुष्पके समान सब लोग (नगरवासी) प्रफुल्लित हो गये हैं॥ ७॥ (यह प्रश्न-फल प्रियजनका मिलन बतलाता है।)

सप्तक—५

मन मलीन मानी महिप कोक कोकनद बृंद।
सुहृद समाज चकोर चित प्रमुदित परमानंद॥ १॥

(श्रीरामके धनुष तोड़नेसे) चकवा पक्षी और कमल-समूहके समान अभिमानी राजाओंका मन मलिन (म्लान) हो गया और (महाराज जनकके) प्रियजनोंके समाजका चित्त चकोरोंके समान अत्यन्त आनन्दसे प्रसन्न हो गया॥ १॥

(यह शकुन विपक्षपर विजय सूचित करता है।)

तेहि अवसर रावन नगर असगुन असुभ अपार।
होहिं हानि भय मरन दुख सूचक बारहिं बार॥ २॥

उस समय रावणके नगर (लङ्का) में अशुभदायक बहुत अधिक अपशकुन हुए, जो बार-बार यह सूचित करते थे कि हानि, भयकी प्राप्ति, मरण और दुःख होगा॥ २॥ (यह शकुन अनिष्ट सूचित करता है।)

मधु माधव दसरथ जनक, मिलब राज रितुराज।
सगुन सुवन नव दल सुतरु, फूलत फलत सुकाज॥ ३॥

महाराज दशरथ और महाराज जनक चैत्र-वैशाखके समान हैं, उनका मिलन ऋतुराज वसन्त है। इस समयके शकुन उत्तम वृक्षसे नवीन कोपल फूटनेके समान हैं, जो शुभकार्यरूपी पुष्प और फल देते हैं॥ ३॥ (शुभकार्य-सम्बन्धी प्रश्नका फल सुखदायक है।)

बिनय पराग सुप्रेम रस, सुमन सुभग संबाद।
कुसुमित काज रसाल तरु सगुन सुकोकिल नाद॥ ४॥

उनकी (महाराज दशरथ और जनकजीकी परस्परकी) विनम्रता पुष्प-पराग है, (परस्परका) उत्तम प्रेम रस (मधु) है और उनका परस्पर सम्भाषण पुष्प है। इस समयका कार्य (श्रीसीता-रामका विवाह) ही आमके वृक्षमें पुष्प (मौर) लगना है, जिसमें शकुन कोकिलकी कूकके समान होते हैं॥ ४॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

उदित भानु कुल भानु लखि लुके उलूक नरेस।
गये गँवाइ गरूर पति, धनु मिस हये महेस॥ ५॥

सूर्यकुलके सूर्य (श्रीराम) को उदित देखकर उल्लुओंके

समान (अभिमानी) राजालोग अपना गर्व और सम्मान खोकर छिप गये। मानो शङ्करजीने ही (अपने) धनुषके बहाने उन्हें नष्ट कर दिया॥५॥ (प्रश्नका फल पराजय-सूचक तथा निकृष्ट है।)

चारि चारु दसरथ कुँवर निरखि मुदित पुर लोग।
कोसलेस मिथिलेस को समउ सराहन जोग॥६॥

महाराज दशरथके चारों सुन्दर कुमारोंको देखकर जनकपुरके लोग आनन्दित हो रहे हैं। महाराज दशरथ तथा महाराज जनकका समय (सौभाग्य) प्रशंसा करने योग्य है॥६॥ (प्रश्नका फल उत्तम है।)

एक बितान बिबाहि सब सुवन सुमंगल रूप।
तुलसी सहित समाज सुख सुकृत सिंधु दोउ भूप॥७॥

तुलसीदासजी कहते हैं—पुण्यके समुद्रस्वरूप दोनों नरेश (दशरथजी और जनकजी) एक ही मण्डपके नीचे सुमङ्गलके मूर्तिमान् रूप सभी (चारों) पुत्रोंका विवाह करके समाजके साथ सुखी हो रहे हैं॥७॥ (विवाहादि मङ्गल-कार्यसम्बन्धी प्रश्नका फल उत्तम है।)

सप्तक—६

दाइज भयउ अनेक बिधि, सुनि सिहाहिं दिसिपाल।
सुख संपति संतोषमय, सगुन सुमंगल माल॥१॥

अनेक प्रकारसे (जनकजीद्वारा) दहेज दिया गया, जिसे सुनकर दिक्पाल भी सिहाते (ईर्ष्या करने लगते) हैं। यह शकुन सुख, सम्पत्ति तथा सन्तोषदायी एवं श्रेष्ठ मङ्गल-परम्पराका सूचक है॥१॥

बर दुलहिनि सब परसपर मुदित पाइ मनकाम।
चारु चारि जोरी निरखि दुहुँ समाज अभिराम॥२॥

मनकी साध पूर्ण होनेसे सभी वर एवं दुलहिनें परस्पर प्रसन्न हो रही हैं। इन सुन्दर चारों जोड़ियोंको देखकर दोनों (अयोध्या और जनकपुरके) समाज, अत्यन्त सुखी हैं॥२॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

चारिउ कुँवर बियाहि पुर गवने दसरथ राउ।
भये मंजु मंगल सगुन गुर सुर संभु पसाउ॥३॥

महाराज दशरथ चारों कुमारोंका विवाह करके अपने नगर (अयोध्या) को लौट गये। गुरु वसिष्ठ, देवताओं तथा शङ्करजीकी कृपासे मङ्गलमय शकुन हुए॥३॥ (मङ्गलकार्य-सम्बन्धी प्रश्नका फल उत्तम है।)

पंथ परसु धर आगमन समय सोच सब काहु।
राज समाज विषाद बड़, भय बस मिटा उछाहु॥४॥

मार्गमें परशुरामजीके आ जानेके समय सभीको चिन्ता हो गयी। राजसमाजमें बड़ी उदासी छा गयी, भयके कारण उत्साह नष्ट हो गया॥४॥ (प्रश्नका फल अशुभ है।)

रोष कलुष लोचन भ्रुकुटि, पानि परसु धनु बान।
काल कराल बिलोकि मुनि सब समाज बिलखान॥५॥

क्रोधसे लाल नेत्र एवं टेढ़ी भौंहें किये तथा हाथमें फरसा और धनुष-बाण लिये मुनि परशुरामजीको (साक्षात्) भयङ्कर कालके समान देखकर पूरा समाज दुःखी हो गया॥५॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

प्रभुहि सौंपि सारंग मुनि दीन्ह सुआसिरबाद।
जय मंगल सूचक सगुन राम राम संबाद॥६॥

प्रभु श्रीरामको अपना शार्ङ्गधनुष देकर मुनि परशुरामजीने उन्हें आशीर्वाद दिया। श्रीराम और परशुरामजीकी वार्ताका यह शकुन विजय और मङ्गल सूचित करनेवाला है॥ ६॥

अवध अनंद बधावनो, मंगल गान निसान।
तुलसी तोरन कलस पुर चँवर पताक बितान॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि अयोध्यामें आनन्दकी बधाई बज रही है, मङ्गल-गीत गाये जा रहे हैं, डंकोंपर चोट पड़ रही है; नगरमें तोरण बँधे हैं, कलश सजे हैं; चँवर-पताका-सहित मण्डप सजाये गये हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—७

साजि सुमंगल आरती, रहस बिबस रनिवासु।
मुदित मात परिछन चलीं उमगत हृदयँ हुलासु॥ १॥

(अयोध्याका) रनिवास आनन्दमग्न हो गया। मङ्गल-आरती सजाकर माताएँ (वर-दुलहिनका) परिछन करने चलीं। हृदयमें आनन्दकी बाढ़ आ रही है॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

करहिं निछावरि आरती, उमगि उमगि अनुराग।
बर दुलहिन अनुरूप लखि सखी सराहहिं भाग॥ २॥

सखियाँ प्रेमसे बार-बार उमंगमें आकर आरती करके न्योछावर करती हैं और वर तथा दुलहिनोंको परस्पर देखकर (अपने) भाग्यकी प्रशंसा करती हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

मुदित नगर नर नारि सब, सगुन सुमंगल मूल।
जय धुनि मुनि सुर दुंदुभी बाजहिं बरषहिं फूल॥ ३॥

अयोध्या-नगरवासी सभी स्त्री-पुरुष प्रसन्न हैं। मुनिगण

जयध्वनि कर रहे हैं और देवता नगारे बजाकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं। यह शकुन सुमङ्गलका मूल (मङ्गलदायी) है॥ ३॥

आये कोसलपाल पुर, कुसल समाज समेत।
समउ सुनत सुमिरत सुखद, सकल सिद्धि सुभ देत॥ ४॥

श्रीकोसलनाथ (महाराज दशरथ) बरातके साथ कुशलपूर्वक नगरमें आ गये। यह अवसर सुननेसे तथा स्मरण करनेसे सुख देनेवाला है और सभी शुभ सिद्धियाँ देता है॥ ४॥

रूप सील बय बंस गुन, सम बिबाह भये चारि।
मुदित राउ रानी सकल, सानुकूल त्रिपुरारि॥ ५॥

रूप, शील, अवस्था, वंश और गुणमें चारों विवाह समान हुए, इससे महाराज (दशरथ) तथा सब रानियाँ प्रसन्न हैं कि भगवान् शङ्कर (हमारे) अनुकूल हैं॥ ५॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

बिधि हरि हर अनुकूल अति दशरथ राजहि आजु।
देखि सराहत सिद्ध सुर संपति समय समाजु॥ ६॥

आज महाराज दशरथके लिये ब्रह्मा, विष्णु तथा शङ्करजी अत्यन्त अनुकूल हैं। उनकी सम्पत्ति तथा सौभाग्यमय समाजको देखकर सिद्ध तथा देवतातक उनकी प्रशंसा करते हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सगुन प्रथम उनचास सुभ, तुलसी अति अभिराम।
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर, गो गन गंगा राम॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि प्रथम सर्गका यह उनचासवाँ दोहा शुभ शकुनका सूचक, अत्यन्त सुन्दर है। देवता, ब्राह्मण, गायें, गङ्गाजी तथा श्रीराम—सभी प्रसन्न हैं॥ ७॥

द्वितीय सर्ग

सप्तक—१

समय राम जुबराज कर मंगल मोद निकेतु।
सगुन सुहावन संपदा सिद्धि सुमंगल हेतु॥ १॥

श्रीरामके युवराज-पदपर अभिषेकका समय आनन्द-मङ्गलका धाम है। यह शकुन सुहावना है। सम्पत्ति, सिद्धि और मङ्गलोंका कारण (देनेवाला) है॥ १॥

सुर माया बस केकई कुसमयँ कीन्हि कुचालि।
कुटिल नारि मिस होइ छलु अनभल आजु कि कालि॥ २॥

देवताओंकी मायाके वश होकर महारानी कैकेयीने बुरे समय (अनवसर) में कुचाल चली। किसी दुष्टा स्त्रीके बहाने छल होगा, आज या कलमें ही (बहुत शीघ्र) बुराई होनेवाली है॥ २॥

कुसमय कुसगुन कोटि सम, राम सीय बन बास।
अनरथ अनभल अवधि जग, जानब सरबस नास॥ ३॥

श्रीराम-जानकीका वनवास करोड़ों बुरे समय तथा अपशकुनोंके समान है। यह संसारमें अनर्थ और बुराईकी सीमा है। सर्वस्वका विनाश (निश्चित) समझो॥ ३॥

सोचत पुर परिजन सकल, बिकल राउ रनिवास।
छल मलीन मन तीय मिस बिपति बिषाद बिनास॥ ४॥

सभी नगरवासी तथा कुटुम्बीजन चिन्तित हैं, महाराज तथा रनिवास व्याकुल हो रहा है, (देवताओंने) मलिन-मनकी स्त्री (मन्थरा) के बहाने छल करके विपत्ति, शोक तथा विनाशका साज बना दिया॥ ४॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

लखन राम सिय बन गमनु सकल अमंगल मूल।
सोच पोच संताप बस कुसमय संसय सूल॥ ५॥

लक्ष्मणजी, श्रीरामजी और श्रीजानकीजीका वन जाना समस्त अमङ्गलोंकी जड़ है। शोक एवं निम्न कोटिके सन्तापके वश होकर बुरे समयमें सन्देहवश वेदना भोगनी होगी॥ ५॥

प्रथम बास सुरसरि निकट सेवा कीन्हि निषाद।
कहब सुभासुभ सगुन फल बिसमय हर्ष बिषाद॥ ६॥

(श्रीरामने) प्रथम दिन गङ्गाजीके समीप (शृंगवेरपुर) में निवास किया तथा निषादराज गुहने उनकी सेवा की। इस शकुनका फल मैं शुभ और अशुभ दोनों कहूँगा। आश्चर्य, हर्ष तथा (अन्तमें) शोक प्राप्त होगा॥ ६॥

चले नहाइ प्रयाग प्रभु लखन सीय रघुराज।
तुलसी जानब सगुन फल, होइहि साधुसमाज॥ ७॥

(गङ्गाजीमें) स्नान करके प्रभु श्रीरघुनाथजी, लक्ष्मणजी और जानकीके साथ प्रयागको चले। तुलसीदासजी कहते हैं कि सत्पुरुषोंका संग होगा, यही इस शकुनका फल जानना चाहिये॥ ७॥

सप्तक—२

सीय राम लोने लखन तापस वेष अनूप।
तप तीरथ जप जाग हित सगुन सुमंगल रूप॥ १॥

लावण्यमय श्रीराम-लक्ष्मण तथा सीताजीका तपस्वी-वेष अनुपम है। तपस्या, तीर्थयात्रा, जप तथा यज्ञ करनेके लिये यह शकुन सुमङ्गल-स्वरूप (मङ्गल-सूचक) है॥ १॥

सीता लखन समेत प्रभु, जमुना उतरि नहाइ।
चले सकल संकट समन सगुन सुमंगल पाइ॥ २॥

श्रीसीताजी और लक्ष्मणजीके साथ प्रभु यमुनाजीके पार उतरकर स्नान करके, समस्त संकटोंको नष्ट करनेवाले मङ्गलमय शकुन पाकर आगे चले॥ २॥ (यात्राके लिये उत्तम फल सूचित होता है।)

अवध सोक संताप बस बिकल सकल नर नारि।
बाम बिधाता राम बिनु माँगत मीचु पुकारि॥ ३॥

अयोध्यामें सभी नर-नारी श्रीरामके बिना शोक-सन्तापके कारण व्याकुल होकर प्रतिकूल हुए विधातासे पुकारकर मृत्यु माँगते हैं॥ ३॥ (प्रश्न-फल अनिष्ट है।)

लखन सीय रघुबंस मनि पथिक पाय उर आनि।
चलहु अगम मग सुगम सुभ, सगुन सुमंगल खानि॥ ४॥

श्रीरघुनाथजी, श्रीजानकीजी तथा लक्ष्मणजी—इन पथिकोंके श्रीचरणोंको हृदयमें लाकर (उनका ध्यान करके) अगम्य (विकट) मार्गमें भी चलो तो वह सुगम और शुभ हो जायगा। यह शकुन कल्याणकी खानि है॥ ४॥

ग्राम नारि नर मुदित मन लखन राम सिय देखि।
होइ प्रीति पहिचान बिनु मान बिदेस बिसेषि॥ ५॥

श्रीराम-लक्ष्मण तथा जानकीजीका दर्शन करके गाँवोंके स्त्री-पुरुष मन-ही-मन आनन्दित हो रहे हैं। (इस शकुनका फल यह है कि) बिना पहिचानके भी प्रेम होगा और विदेशमें विशेष सम्मान प्राप्त होगा॥ ५॥

बन मुनि गन रामहि मिलहिं मुदित सुकृत फल पाइ।
सगुन सिद्ध साधक दरस, अभिमत होइ अघाइ॥ ६॥

वनमें श्रीरामसे मुनिगण मिलते हैं और अपने पुण्योंका फल (श्रीराम-दर्शन) पाकर प्रसन्न होते हैं। यह शकुन साधकको सिद्ध पुरुषका दर्शन होनेकी सूचना देता है, मनचाहा फल भरपूर प्राप्त होगा॥ ६॥

चित्रकूट पय तीर प्रभु बसे भानु कुल भानु।
तुलसी तप जप जोग हित सगुन सुमंगल जानु॥ ७॥

सूर्यकुलके (प्रकाशक) सूर्य प्रभु श्रीरामने चित्रकूटमें पयस्विनी नदीके किनारे निवास किया। तुलसीदासजी कहते हैं कि तपस्या, जप तथा योगसाधनाके लिये यह शकुन मङ्गलप्रद समझो॥ ७॥

सप्तक—३

हंस बंस अवतंस जब कीन्ह बास पय पास।
तापस साधक सिद्ध मुनि, सब कहँ सगुन सुपास॥ १॥

सूर्यवंशावतंस (श्रीराम) ने जब पयस्विनी नदीके पास निवास किया तब तपस्वी, साधक, सिद्ध, मुनिगण—सभीको सुख-सुविधा हो गयी। ऐसे लोगोंकी सुख-सुविधा यह शकुन सूचित करता है॥ १॥

बिटप बेलि फूलहिं फलहिं जल थल बिमल बिसेषि।
मुदित किरात बिहंग मृग मंगल मूरति देखि॥ २॥

वृक्ष और लताएँ फूलने-फलने लगीं, जल और स्थल विशेषरूपसे निर्मल हो गये। मङ्गल-मूर्ति श्रीरामको देखकर (वनके) किरात, पक्षी, पशु—सभी प्रसन्न हो गये॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सींचति सीय सरोज कर बये बिटप बट बेलि।
समय सुकाल किसान हित सगुन सुमंगल केलि॥ ३॥

अपने बोये वटवृक्ष एवं लताओंको श्रीजानकीजी अपने करकमलोंसे सींचती हैं। यह शकुन किसानोंके लिये सुकाल एवं आनन्दमयी क्रीड़ाका सूचक है॥ ३॥

हय हाँके फिरि दखिन दिसि हेरि हेरि हिहिनांत।
भये निषाद बिषाद बस अवध सुमंतहि जात॥ ४॥

सुमन्त्रजीने अयोध्या जाते समय घोड़ोंको हाँका तो वे बार-बार मुड़कर दक्षिण दिशाकी ओर देख-देखकर हिनहिनाते हैं, इससे निषादलोग भी शोकसंतप्त हो गये॥ ४॥ (प्रियवियोग तथा शोकसूचक शकुन है।)

सचिव सोच ब्याकुल सुनत असगुन अवध प्रबेस।
समाचार सुनि सोक बस माँगी मीचु नरेस॥ ५॥

अयोध्यामें प्रवेश करते समय (सियारोंका रोना आदि) अमङ्गल-सूचक शब्द होते सुनकर मन्त्री (सुमन्त्र) शोकसे व्याकुल हो गये। उनसे (श्रीरामका) समाचार सुनकर शोकविवश महाराज दशरथने मृत्यु माँगी॥ ५॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

राम राम कहि राम सिय राम सरन भये राउ।
सुमिरहु सीताराम अब, नाहिन आन उपाउ॥ ६॥

महाराज दशरथ राम-राम, सीता-राम कहकर श्रीरामकी शरण चले गये (देह त्याग दिया), अब (तुम भी) श्रीसीतारामका स्मरण करो, (घोर संकटसे बचनेका) दूसरा कोई उपाय नहीं है॥ ६॥

राम बिरहँ दसरथ मरनु, मुनि मन अगम सुमीचु।
तुलसी मंगल मरन तरु, सुचि सनेह जल सींचु॥ ७॥

श्रीरामके वियोगमें महाराज दशरथकी मृत्यु ऐसी उत्तम मृत्यु है कि (ऐसी उत्तम मृत्युकी प्राप्ति) मुनियोंके मनके

लिये भी अगम्य (अचिन्त्य) है। तुलसीदासजी कहते हैं कि ऐसी मङ्गलमयी मृत्युके वृक्षको प्रेमके पवित्र जलसे सींचो॥ ७॥ (शकुन शुभ मृत्यु उत्तम गतिका सूचक है।)

सप्तक—४

धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमारु।
अगम सुगम सब काज करु, करतल सिद्धि बिचारु॥ १॥

धैर्यशाली वीर रघुनाथजीके प्रिय श्रीहनुमान्‌जीका स्मरण करके कठिन या सरल—जो भी कार्य करो, सबकी सफलता हाथमें आयी हुई समझो॥ १॥

सुमिरि सत्रु सूदन चरन सगुन सुमंगल मानि।
परपुर बाद बिबाद जय जूझ जुआ जय जानि॥ २॥

श्रीशत्रुघ्नजीके चरणोंका स्मरण करो। यह शकुन मङ्गलप्रद मानो। दूसरेके नगरमें वाद-विवादमें विजय तथा युद्ध और जुएमें भी विजय समझो॥ २॥

सेवक सखा सुबंधु हित सगुन बिचारु बिसेषि।
भरत नाम गुनगन बिमल सुमिरि सत्य सब लेखि॥ ३॥

विशेषरूपसे सेवकों, मित्रों तथा अच्छे (अनुकूल) भाइयोंके लिये इस शकुनका विचार है। श्रीभरतजीके नाम तथा उनके निर्मल गुणोंका स्मरण करके सब (कार्य) सत्य (सफल) समझो॥ ३॥

साहिब समरथ सीलनिधि सेवत सुलभ सुजान।
राम सुमिरि सेइअ सुप्रभु, सगुन कहब कल्यान॥ ४॥

श्रीराम शक्ति-सम्पन्न, शील-निधान एवं परम सयाने

स्वामी हैं; उनकी सेवा अत्यन्त सुलभ है। उन श्रीरामका स्मरण करके उत्तम स्वामीकी सेवा करो। इस शकुनको (नौकरी आदिके लिये) हम मङ्गलमय कहेंगे॥ ४॥

सुकृत सील सोभा अवधि सीय सुमंगल खानि।
सुमिरि सगुन तिय धर्म हित कहब सुमंगल जानि॥ ५॥

श्रीजानकीजी पुण्य, शील और सौन्दर्यकी सीमा तथा मङ्गलकी खानि हैं; उनका स्मरण करो। इस शकुनको हम मङ्गलकारी जानकर स्त्रियोंके पातिव्रत-धर्मके अनुकूल कहेंगे॥ ५॥

ललित लखन मूरति हृदयँ आनि धरें धनु बान।
करहु काज सुभ सगुन सब मुद मंगल कल्यान॥ ६॥

धनुष-बाण लिये लक्ष्मणजीकी सुन्दर मूर्ति हृदयमें ले आकर कार्य करो। शकुन शुभ है। सब प्रकारसे आनन्द-मङ्गल एवं कल्याण होगा॥ ६॥

राम नाम पर राम ते प्रीति प्रतीति भरोस।
सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि मेरा प्रेम, विश्वास और भरोसा श्रीरामसे अधिक राम-नामपर है। उस (राम-नाम) का स्मरण करनेसे शकुन सभी सुमङ्गलका कोष हो जाता है॥ ७॥

सप्तक—५

गुरु आयसु आये भरत निरखि नगर नर नारि।
सानुज सोचत पोच बिधि लोचन मोचत बारि॥ १॥

गुरु (वसिष्ठ) की आज्ञासे भरतजी (ननिहालसे) लौट आये। अयोध्याके स्त्री-पुरुषों (की दशा) को देखकर छोटे

भाई (शत्रुघ्न)के साथ वे सोचते हैं कि 'विधाता बड़ा नीच काम करनेवाला है' और नेत्रोंसे आँसू बहाते हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

भूप मरनु प्रभु बन गवनु सब बिधि अवध अनाथ।
रोवत समुझि कुमातु कृत, मीजि हाथ धुनि माथ॥ २॥

महाराज दशरथकी मृत्यु, प्रभु श्रीरामका वन जाना तथा सब प्रकारसे अयोध्याका अनाथ होना—इन सबको दुष्टहृदया माता (कैकेयी) की करतूत समझकर वे हाथ मलते और सिर पीटकर रोते हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

बेदबिहित पितु करम करि, लिये संग सब लोग।
चले चित्रकूटहि भरत ब्याकुल राम बियोग॥ ३॥

वैदिक विधिसे पिताका अन्त्येष्टि-कर्म करके भरतजीने सब लोगोंको साथ ले लिया और श्रीरामके वियोगमें व्याकुल होकर वे चित्रकूटको चल पड़े॥ ३॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

राम दरस हियँ हरषु बड़ भूपति मरन बिषादु।
सोचत सकल समाज सुनि राम भरत संबादु॥ ४॥

श्रीरामके दर्शनसे (सबके) हृदयमें बड़ी प्रसन्नता है, (साथ ही) महाराज दशरथकी मृत्युका दुःख (भी) है। अब श्रीराम तथा भरतका परस्पर वार्तालाप सुनकर समस्त समाज चिन्ता करने लगा है॥ ४॥ (प्रश्न-फल असफलता तथा दुःखसूचक है।)

सुनि सिख आसिष पाँवरी पाइ नाइ पद माथ।
चले अवध संताप बस, बिकल लोग सब साथ॥ ५॥

(प्रभुकी) शिक्षा सुनकर, आशीर्वाद तथा चरण-पादुका पाकर एवं उनके चरणोंमें मस्तक झुकाकर सन्तापवश (दुःखित-चित्त) भरत अयोध्या चले, साथके सभी लोग व्याकुल हैं॥ ५॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

भरत नेम ब्रत धरम सुभ राम चरन अनुराग।
सगुन समुझि साहस करिय, सिद्ध होइ जप जाग॥ ६॥

श्रीभरतजीके शुभ नियम, व्रत, धर्माचरण तथा श्रीरामके चरणोंमें प्रेमको उत्तम शकुन समझकर साहसपूर्वक (कार्य प्रारम्भ) करो; इससे जप और यज्ञ सिद्ध (सफल) होंगे॥ ६॥

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लखन समेत।
राम नाम जप जापकहि तुलसी अभिमत देत॥ ७॥

प्रभु श्रीराम श्रीजानकीजी तथा लक्ष्मणजीके साथ सर्वदा चित्रकूटमें निवास करते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीराम-नामका जप जापकको अभीष्ट फल देता है॥ ७॥ (जाप आदि साधन सफल होंगे।)

सप्तक—६

पय पावनि, बन भूमि भलि, सैल सुहावन पीठ।
रागिहि सीठ बिसेषि थलु, बिषय बिरागिहि मीठ॥ १॥

पयस्विनी नदी पवित्र है, वन-भूमि उत्तम है, चित्रकूट पर्वत सुहावना तथा देवस्थान-स्वरूप है। यह स्थल संसारके भोगोंमें आसक्त लोगोंके लिये अत्यन्त नीरस है; परन्तु विषयोंसे विरक्त लोगोंके लिये मधुर (प्रिय) है॥ १॥ (सांसारिक कामना है तो असफलता और भजन-पूजन-सम्बन्धी प्रश्न है तो सफलता प्राप्त होगी।)

फटिक सिला मन्दाकिनी सिय रघुबीर बिहार।
राम भरत हित सगुन सुभ, भूतल भगति भँडार॥ २॥

मन्दाकिनी-तटपर स्फटिकशिला श्रीसीतारामजीकी क्रीड़ाभूमि

है। श्रीरामभक्तोंके लिये शकुन शुभ है। पृथ्वीपर (इसी जन्ममें) भक्तिका भण्डार (श्रेष्ठ भक्ति) प्राप्ति होगी॥ २॥

सगुन सकल संकट समन, चित्रकूट चलि जाहु।
सीता राम प्रसाद सुभ, लघु साधन बड़ लाहु॥ ३॥

यह शकुन समस्त संकटोंको दूर करनेवाला है। चित्रकूट चले जाओ, वहाँ श्रीसीतारामकी कृपासे भला होगा, थोड़े साधनसे भी वहाँ बड़ा लाभ होगा॥ ३॥

दिए अत्रि तिय जानकिहि बसन बिभूषन भूरि।
राम कृपा संतोष सुख होहिं सकल दुख दूरि॥ ४॥

महर्षि अत्रिकी पत्नी अनुसूयाजीने श्रीजानकीजीको बहुत-से वस्त्र और आभूषण दिये। श्रीरामकी कृपासे सन्तोष तथा सुख प्राप्त होंगे और सब दुःख दूर हो जायँगे॥ ४॥

काक कुचालि बिराध बध देह तजी सरभंग।
हानि मरन सूचक सगुन अनरथ असुभ प्रसंग॥ ५॥

काक (जयन्त) ने कुचाल चली (श्रीजानकीजीके चरणोंमें चोंच मारी), विराध राक्षसको (प्रभुने) मारा, शरभंग ऋषिने (प्रभुके सम्मुख) शरीर छोड़ा। यह शकुन हानि, मृत्यु, अनर्थ और अशुभ अवसरोंके आनेका सूचक है॥ ५॥

राम लखन मुनि गन मिलन मंजुल मंगल मूल।
सत समाज तब होइ जब रमा राम अनुकूल॥ ६॥

श्रीराम-लक्ष्मणके साथ मुनियोंका मिलन सुन्दर कल्याणका मूल है। जब श्रीराम-जानकी अनुकूल हों, तभी सत्पुरुषोंका साथ होता है॥ ६॥ (सत्संग-प्राप्तिका सूचक शकुन है।)

मिले कुंभसंभव मुनिहिं लखन सीय रघुराज।
तुलसी साधु समाज सुख, सिद्ध दरस सुभ काज॥ ७॥

श्रीलक्ष्मण तथा श्रीजानकीजीके साथ श्रीरघुनाथजी महर्षि अगस्त्यजीसे मिले। तुलसीदासजी कहते हैं कि साधु-पुरुषोंके संगका सुख होगा तथा उनके दर्शनसे शुभ कार्य सफल होंगे॥ ७॥

सप्तक—७

सुनि मुनि आयसु प्रभु कियो पंचबटी बर बास।
भइ महि पावनि परसि पद, भा सब भाँति सुपास॥ १॥

मुनि (अगस्त्यजी) की आज्ञा पाकर प्रभु श्रीरामने सुन्दर पञ्चवटीमें निवास किया। उनके श्रीचरणोंका स्पर्श करके वह (दण्डक-वनकी शापग्रस्त) भूमि पवित्र हो गयी, सब प्रकारसे वहाँ सुख-सुविधा हो गयी॥ १॥ (विपत्ति दूर होकर सुख होगा।)

सरित सरोबर सजल सब जलज बिपुल बहु रंग।
समउ सुहावन सगुन सुभ राजा प्रजा प्रसंग॥ २॥

सब नदियाँ और सरोवर जलसे भरे रहने लगे। उनमें अनेक रंगोंके कमल खिल गये। बड़ा सुहावना समय हो गया। राजा-प्रजाके सम्बन्धमें यह शकुन शुभ है॥ २॥

बिटप बेलि फूलहिं फलहिं, सीतल सुखद समीर।
मुदित बिहँग मृग मधुप गन बन पालक दोउ बीर॥ ३॥

वृक्ष और लताएँ फूलती-फलती हैं, सुखदायी शीतल वायु चलती है; पक्षी, पशु तथा भौंरे आनन्दमें हैं; क्योंकि दोनों भाई (श्रीराम-लक्ष्मण) अब वनकी रक्षा करनेवाले हैं॥ ३॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

मोदाकर गोदावरी, बिपिन सुखद सब काल।
निर्भय मुनि जप तप करहिं, पालक राम कृपाल॥ ४॥

गोदावरी नदी आनन्ददायिनी है और वन सभी समय सुखदायी है। अब कृपालु श्रीरामके रक्षक होनेसे वहाँ मुनिगण भयरहित होकर जप-तप करते हैं॥ ४॥ (साधन-भजन निर्विघ्न सफल होगा।)

भेंट गीध रघुराज सन, दुहुँ दिसि हृदयँ हुलासु।
सेवक पाइ सुसाहिबहि, साहिब पाइ सुदासु॥ ५॥

श्रीरघुनाथजीसे गीधराज जटायुकी भेंट होनेपर दोनों ओर चित्तमें आनन्द हुआ; सेवक (जटायु) को पाकर उत्तम स्वामी (श्रीराम) को और स्वामी (श्रीराम) को पाकर उत्तम सेवक (जटायु) को॥ ५॥ (सेवा और भक्ति-सम्बन्धी प्रश्नका फल शुभ है।)

पढ़हिं पढ़ावहिं मुनि तनय आगम निगम पुरान।
सगुन सुबिद्या लाभ हित जानब समय समान॥ ६॥

मुनि-बालक परस्पर वेद, स्मृति, पुराण पढ़ते-पढ़ाते हैं। यह शकुन समयके अनुसार उत्तम विद्याकी प्राप्तिके लिये लाभप्रद समझना॥ ६॥

निज कर सींचति जानकी तुलसी लाइ रसाल।
सुभ दूती उनचास भलि बरषा कृषी सुकाल॥ ७॥

श्रीजानकीजी आमके वृक्ष लगाकर उन्हें अपने हाथोंसे सींचती हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि दूसरे सर्गका यह उनचासवाँ दोहा अच्छी वर्षा, उत्तम खेती तथा सुकालका शुभसूचक है॥ ७॥

तृतीय सर्ग

सप्तक—१

दंडकबन पावन करन चरन सरोज प्रभाउ।
ऊसर जामहिं, खल तरहिं, होइँ रंक तें राउ॥ १॥

दण्डकवनको पवित्र करनेवाले (श्रीरामके) चरणकमलोंके प्रभावसे ऊसर भूमिमें भी अन्न उगने लगता है, दुर्जन भी (संसार-सागरसे) पार हो जाते हैं और (मनुष्य) दरिद्रसे राजा हो जाता है॥ १॥ (प्रश्न-फल परम शुभ है।)

कपट रूप मन मलिन गइ सूपनखा प्रभु पास।
कुसगुन कठिन कुनारि कृत कलह कलुष उपहास॥ २॥

मलिन मनवाली शूर्पणखा छलसे रूपवती बनकर प्रभुके समीप गयी। यह भारी अपशकुन है, दुष्टा नारीके कारण झगड़ा, पाप तथा हँसी (अकीर्ति) होगी॥ २॥

नाक कान बिनु बिकल भइ, बिकट कराल कुरूप।
कुसगुन पाउ न देब मग, पग पग कंटक कूप॥ ३॥

(शूर्पणखा) नाक-कानके (काटे जानेसे उनके) बिना व्याकुल हो गयी, उसका रूप अटपटा, भयंकर तथा भद्दा हो गया। यह अपशकुन है—(यात्राके लिये) मार्गमें पैर मत रखना, पद-पदपर काँटे और कुएँ (विघ्न-बाधाएँ) हैं॥ ३॥

खर दूषन देखी दुखित, चले साजि सब साज।
अनरथ असगुन अघ असुभ अनभल अखिल अकाज॥ ४॥

खर-दूषणने (शूर्पणखाको) दुःखी देखा तो (सेनाका) सब साज सजाकर चले। यह अपशकुन बुराइयों, पाप, अशुभ, अहित तथा सब प्रकारकी हानि बतलाता है॥ ४॥

कटु कुठायँ करटा रटहिं, केंकरहिं फेरु कुभाँति।
नीच निसाचर मीच बस अनी मोह मद माति॥ ५॥

कौवे बुरे स्थानोंमें बैठे बार-बार कठोर ध्वनि करते हैं, शृगाल बुरी तरह रो रहे हैं, नीच राक्षसोंकी सेना मृत्युके वश होकर मोह तथा गर्वसे मतवाली हो रही है॥ ५॥ (शकुन अनिष्टसूचक है।)

राम रोष पावक प्रबल निसिचर सलभ समान।
लरत परत जरि जरि मरत, भए भसम जगु जान॥ ६॥

श्रीरामजीका क्रोध प्रज्वलित अग्निके समान है और राक्षस पतंगोंके समान हैं। लड़ाई करते हुए वे उस (क्रोधाग्नि) में पड़कर जल-जलकर मर रहे हैं। इस प्रकार वे भस्म हो गये, यह बात संसार जानता है॥ ६॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

सीता लखन समेत प्रभु सोहत तुलसीदास।
हरषत सुर बरषत सुमन सगुन सुमंगल बास॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि प्रभु श्रीराम श्रीजानकी और लक्ष्मणजीके साथ सुशोभित हैं। देवता प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं। यह शकुन सुमङ्गलका निवासरूप है॥ ७॥

सप्तक—२

सुभट सहस चौदह सहित भाइ काल बस जानि।
सूपनखा लंकहि चली असुभ अमंगल खानि॥ १॥

चौदह सहस्र उच्च कोटिके योद्धा राक्षसोंसहित भाइयों (खर-दूषण) को कालवश हुआ (मरा) जानकर अशुभ और अमङ्गलोंकी खान शूर्पणखा लङ्काके लिये प्रस्थित

हुई॥ १॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

बसन सकल सोनित समल, बिकट बदन गत गात।
रोवति रावन की सभाँ, तात मात हा भ्रात॥ २॥

उस (शूर्पणखा) के सब वस्त्र रक्तसे लथपथ हैं, भयंकर मुख है और अंग (नाक-कान) कटे हैं। रावणकी सभामें वह 'हाय बाप! हाय मैया! हाय भैया!' कहकर रो रही है॥ २॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

काल कि मूरति कालिका कालराति बिकराल।
बिनु पहिचाने लंकपति सभा सभय तेहि काल॥ ३॥

कालकी मूर्ति, कालिका अथवा कालरात्रिके समान भयंकर उसे (शूर्पणखाको) पहिचान न सकनेके कारण उस समय रावणकी सभाके लोग भयभीत हो गये॥ ३॥ (प्रश्न-फल अनिष्ट है।)

सूपनखा सब भाँति गत असुभ अमंगल मूल।
समय साढ़साती सरिस नृपहि प्रजहि प्रतिकूल॥ ४॥

शनैश्चरकी साढ़े सात वर्षकी दशाके समान सब प्रकारसे अशुभ और अमङ्गलकी जड़ शूर्पणखा राजा रावण तथा उसकी प्रजाके लिये प्रतिकूल (विपत्ति लानेवाली) बनकर (लङ्का) पहुँची॥ ४॥ (प्रश्न-फल राजा-प्रजा सबके लिये अनिष्टसूचक है।)

बरबस गवनत रावनहि असगुन भए अपार।
नीचु गनत नहिं मीचु बस मिलि मारीच बिचार॥ ५॥

हठपूर्वक (पञ्चवटीकी ओर) जाते समय रावणको अपार (बहुत अधिक) अपशकुन हुए; किंतु मृत्युवश हुआ वह नीच उनको गिनता (समझता) नहीं, मारीचसे मिलकर (सीताहरणका) विचार करता है॥ ५॥ (प्रश्न-फल अनिष्ट है।)

इत रावन उत राम कर मीचु जानि मारीच।
कनक कपट मृग बेस तब कीन्ह निसाचर नीच॥ ६॥

इधर रावण और उधर श्रीरामके हाथों दोनों ओर मृत्यु (निश्चित) समझकर नीच राक्षस मारीचने तब स्वर्णमृगका कपटमय रूप बनाया॥ ६॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

पंचबटी बट बिटप तर सीता लखन समेत।
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि पञ्चवटीमें एक वटवृक्षके नीचे श्रीजानकीजी तथा लक्ष्मणजीके साथ प्रभु शोभित हैं, वे समस्त मङ्गल (शुभ-फल) प्रदान करते हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—३

मायामृग पहिचानि प्रभु चले सीय रुचि जानि।
बंचक चोर प्रपंच कृत सगुन कहब हित मानि॥ १॥

मायासे बने हुए उस मृगको पहिचान लेनेपर भी (कि यह राक्षस है) श्रीजानकीजीकी इच्छा जानकर प्रभु (उसे मारने) चले। मैं कहूँगा कि ठग, चोर तथा पाखण्डियोंके लिये इस शकुनको हितकर समझो॥ १॥

सीय हरन अवसर सगुन भय संसय संताप।
नारि काज हित निपट गत प्रगट पराभव पाप॥ २॥

सीता-हरणके समयका यह शकुन भय, सन्देह और दुःख बतलाता है। स्त्रियोंकी भलाई-सम्बन्धी कार्य पूर्णतः नष्ट हो जायँगे और पराजय तथा पाप प्रकट (प्रसिद्ध) होंगे॥ २॥

गीधराज रावन समर घायल बीर बिराज।
सूर सुजसु संग्राम महि मरन सुसाहिब काज॥ ३॥

वीर गृध्रराज जटायु रावणसे युद्ध करके घायल पड़े अत्यन्त सुशोभित हो रहे हैं। (यह शकुन कहता है कि) संग्रामभूमिमें वीर सुयश पायेंगे, श्रेष्ठ स्वामीके लिये उनकी मृत्यु होगी॥ ३॥

राम लखनु बन बन बिकल फिरत सीय सुधि लेत।
सूचत सगुन बिषादु बड़ असुभ अरिष्ट अचेत॥ ४॥

श्रीराम-लक्ष्मण व्याकुल होकर वन-वन सीताजीका पता लगाते घूमते हैं। यह शकुन भारी शोक, अशुभ और व्याकुल कर देनेवाले अमङ्गलको सूचित करता है॥ ४॥

रघुबर बिकल बिहंग लखि सो बिलोकि दोउ बीर।
सिय सुधि कहि सिय राम कहि तजी देह मतिधीर॥ ५॥

श्रीरघुनाथजी पक्षी (जटायु) को देखकर व्याकुल हो गये। उस (जटायु) ने दोनों भाइयोंको देखा, उनसे श्रीजानकीका समाचार कहा और उस धीरबुद्धिने 'श्रीसीता-राम' कहकर शरीर छोड़ दिया॥ ५॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

दसरथ ते दसगुन भगति सहित तासु करि काज।
सोचत बंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराज॥ ६॥

महाराज दशरथजीसे भी दसगुनी भक्तिपूर्वक उस (गृध्रराज-) का अन्त्येष्टि कर्म करके कृपासागर प्रभु श्रीरघुनाथजी भाई (लक्ष्मण) के साथ शोक कर रहे हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल शोकसूचक है।)

तुलसी सहित सनेह नित सुमिरहु सीताराम।
सगुन सुमंगल सुभ सदा आदि मध्य परिनाम॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि नित्य प्रेमपूर्वक श्रीसीता-रामका स्मरण करो। यह शकुन शुभ है; प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें सदा मङ्गल होगा॥ ७॥

सप्तक—४

सकल काज सुभ समउ भल, सगुन सुमंगल जानु।
कीरति बिजय बिभूति भलि, हियँ हनुमानहि आनु॥ १॥

सभी कामोंके लिये उत्तम शुभ समय है। इस शकुनको कल्याणदायक समझो। हृदयमें श्रीहनुमान्‌जीका स्मरण करो; कीर्ति, विजय तथा श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्राप्त होगा॥ १॥

सुमिरि सत्रुसूदन चरन चलहु करहु सब काज।
सत्रु पराजय निज बिजय, सगुन सुमंगल साज॥ २॥

श्रीशत्रुघ्नजीके चरणोंका स्मरण करके चलो, सब काम करो। यह शकुन शत्रुकी पराजय एवं अपनी विजय तथा कल्याणकी सामग्री जुटानेवाला है॥ २॥

भरत नाम सुमिरत मिटहिं कपट कलेस कुचालि।
नीति प्रीति परतीति हित, सगुन सुमंगल सालि॥ ३॥

श्रीभरतजीके नामका स्मरण करते ही कपट, क्लेश और (दुष्टोंकी) कुचाल (दुर्नीति) मिट जाती है। नीति-व्यवहार, प्रेम तथा विश्वासके लिये यह शकुन मंगलदायक है॥ ३॥

राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कंद।
सुमिरत करतल सिद्धि जग, पग पग परमानंद॥ ४॥

श्रीरामनाम कलियुगमें कल्पवृक्षके समान (अभीष्टदाता) है, समस्त श्रेष्ठ मङ्गलोंका मूल है, उसका स्मरण करनेसे संसारमें सब सिद्धियाँ हाथमें आ जाती हैं और पद-पदपर परम सुख प्राप्त होता है॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सीता चरन प्रनाम करि, सुमिरि सुनाम सनेम।
सुतिय होहिं पतिदेवता, प्राननाथ प्रिय प्रेम॥ ५॥

श्रीजानकीजीके चरणोंमें प्रणाम करके और उनके सुन्दर

नामका नियमपूर्वक स्मरण करके उत्तम स्त्रियाँ पतिव्रता होती हैं और प्राणनाथ प्रियतम (पति) का प्रेम प्राप्त करती हैं॥ ५॥ (स्त्रियोंको पतिप्रेमकी प्राप्तिका सूचक शकुन है।)

लखन ललित मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह।
सुख संपति कीरति बिजय सगुन सुमंगल गेह॥ ६॥

श्रीलक्ष्मणजीकी मधुरिमामयी सुन्दर मूर्तिका प्रेमपूर्वक स्मरण करो। यह शकुन सुख, सम्पत्ति, कीर्ति, विजय आदि सुमङ्गलोंका घर ही है॥ ६॥

तुलसी तुलसी मंजरी, मंगल मंजुल मूल।
देखत सुमिरत सगुन सुभ, कलपलता फल फूल॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि तुलसीकी मंजरी उत्तम कल्याणकी जड़ है। उसका दर्शन और स्मरण शुभ शकुन है। वह कल्पलताके फलपुष्पके समान (अभीष्ट फल देनेवाली) है॥ ७॥ (शकुन-फल श्रेष्ठ है।)

सप्तक—५

खल बल अंध कबंध बस परे सुबंधु समेत।
सगुन सोच संकट कहब, भूत प्रेत दुख देत॥ १॥

श्रेष्ठ भाई लक्ष्मणके साथ प्रभु बलके गर्वसे अंधे दुष्ट कबन्धके चंगुलमें पड़ गये (उसने दोनों भाइयोंको पकड़ लिया)। मैं कहूँगा कि यह शकुन शोक, विपत्ति तथा भूत-प्रेतकी पीड़ाका सूचक है॥ १॥

पाई नीच सुमीचु भलि, मिटा महा मुनि साप।
बिहँग मरन सिय सोच मन, सगुन सभय संताप॥ २॥

नीच मारीचने उत्तम एवं श्लाघ्य मृत्यु पायी, महामुनि अगस्त्यजीका शाप* दूर हो गया। पक्षी (जटायु) की मृत्यु और सीताजी (के वियोग) का शोक (प्रभुके) मनमें है। यह शकुन भय तथा क्लेशकी प्राप्ति बतलाता है॥ २॥

कहि सबरी सब सीय सुधि, प्रभु सराहि फल खात।
सोच समयँ संतोष सुनि सगुन सुमंगल बात॥ ३॥

शबरीने (प्रभुसे) सीताजीका सब समाचार कहा। प्रभु प्रशंसा करके (उसके दिये) फल खाते हैं। यह शकुन कहता है कि चिन्ताके समय श्रेष्ठ कल्याणकारी बात सुनकर सन्तोष होगा॥ ३॥

पवनसुवन सन भेंट भइ, भूमि सुता सुधि पाइ।
सोच बिमोचन सगुन सुभ मिला सुसेवक आइ॥ ४॥

(प्रभुकी) श्रीहनुमान्‌जीसे भेंट हुई। श्रीसीताजीका समाचार भी उन्होंने पाया। (स्वामी श्रीरामको) उत्तम सेवक आ मिला। यह शकुन शुभ है, शोकको दूर करनेवाला है॥ ४॥

राम लखन हनुमान मन, दुहुँ दिसि परम उछाहु।
मिला सुसाहिब सेवकहि, प्रभुहि सुसेवक लाहु॥ ५॥

श्रीराम-लक्ष्मणके तथा हनुमान्‌जीके भी मनमें दोनों ओर परम उत्साह है। इधर तो सेवक (हनुमान्‌जी) को उत्तम स्वामी मिला और उधर प्रभुको उत्तम सेवक प्राप्त हुआ॥ ५॥ (स्वामी-सेवक-सम्बन्धी प्रश्नका फल शुभ है।)

कीन्ह सखा सुग्रीव प्रभु, दीन्हि बाँह रघुबीर।
सुभ सनेह हित सगुन फल, मिटइ सोच भय भीर॥ ६॥

* सुन्द नामक यक्षके द्वारा ताड़काके गर्भसे मारीच उत्पन्न हुआ था। महर्षि अगस्त्यके शापसे सुन्द भस्म हो गया। उस समय ताड़का अपने पुत्र मारीचके साथ महर्षिको खाने दौड़ी, तब महर्षि अगस्त्यजीने दोनोंको शाप दे दिया—'तुम राक्षस हो जाओ।' श्रीरामद्वारा मारे जानेपर दोनों इस शापसे छूटे।

सुग्रीवने प्रभुको मित्र बनाया और श्रीरघुनाथजीने उन्हें (सुग्रीवको) अपनी (अभय) भुजाका आश्रय दिया। इस शकुनका फल मित्रताके लिये शुभसूचक है; चिन्ता, भय और विपत्ति दूर होगी॥ ६॥

बली बालि बलसालि दलि, सखा कीन्ह कपिराज।
तुलसी राम कृपालु को बिरद गरीब निवाज॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं—(प्रभुने) अत्यन्त बलवान् वालीको नष्ट करके मित्र सुग्रीवको वानरोंका राजा बनाया। कृपामय श्रीरामका यही व्रत है कि वे दीनोंपर कृपा करनेवाले हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—६

बंधु बिरोध न कुसल कुल कुसगुन कोटि कुचालि।
रावन रबि को राहु सो भयो काल बस बालि॥ १॥

भाईसे विरोध करनेपर कुलका कुशल नहीं होता। वही (भाई विभीषणका विरोध) रावणरूपी सूर्यके लिये राहु हो गया और उसीसे वाली कालके वश हुआ (मारा गया)। यह अपशकुन करोड़ों कुचक्रोंका सूचक है॥ १॥

कीन्ह बास बरषा निरखि गिरिबर सानुज राम।
काज बिलंबित सगुन फल होइहि भल परिनाम॥ २॥

वर्षा-ऋतु देखकर छोटे भाईके साथ श्रीरामने श्रेष्ठ पर्वतपर निवास किया। इस शकुनका फल है कि कार्यकी सफलतामें देर होगी, किन्तु परिणाम अच्छा होगा॥ २॥

सीय सोध कपि भालु सब बिदा किए कपिनाथ।
जतन करहु आलस तजहु नाइ राम पद माथ॥ ३॥

वानरराज सुग्रीवने सीताजीका पता लगानेके लिये सब

वानर-भालुओंको विदा किया। श्रीरामके चरणोंमें मस्तक झुकाकर प्रयत्न करो, आलस्य त्याग दो। (कार्य सफल होगा।)॥ ३॥

हनूमान हियँ हरषि तब राम जोहारे जाइ।
मंगल मूरति मारुतिहि सादर लीन्ह बुलाइ॥ ४॥

तब चित्तमें प्रसन्न होकर (सम्मुख) जाकर हनुमान्‌जीने श्रीरामको प्रणाम किया। मङ्गलमूर्ति प्रभुने श्रीहनुमान्‌जीको आदरपूर्वक (पास) बुला लिया॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

डाँटे बानर भालु सब अवधि गये बिन काज।
जो आइहि सो काल बस कोपि कहा कपिराज॥ ५॥

कपिराज सुग्रीवने क्रोध करके सब वानर-भालुओंको डाँटते हुए कहा—'समय बीत जानेपर कार्य किये बिना जो आयेगा, वह कालका शिकार होगा (मारा जायगा)'॥ ५॥ (प्रश्न-फल अनिष्ट है।)

जान सिरोमनि जानि जियँ कपि बल बुद्धि निधानु।
दीन्हि मुद्रिका मुदित प्रभु, पाइ मुदित हनुमानु॥ ६॥

प्रभुने हृदयमें हनुमान्‌जीको ज्ञानियोंमें शिरोमणि तथा बल-बुद्धिका निधान (खजाना) जानकर प्रसन्न होकर अपनी अँगूठी दी, उसे पाकर हनुमान्‌जी प्रसन्न हुए॥ ६॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

तुलसी करतल सिद्धि सब, सगुन सुमंगल साज।
करि प्रनाम रामहि चलहु, साहस सिद्ध सुकाज॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामको प्रणाम करके चलो (प्रस्थान करो)। यह शकुन सुमङ्गल देनेवाला है, सब सिद्धियाँ (सफलताएँ) हाथमें (प्राप्त ही) समझो, साहस करनेसे सब उत्तम कार्य सफल होंगे॥ ७॥

सप्तक—७

नाथ हाथ माथे धरेउ, प्रभु मुदरी मुँह मेलि।
चलेउ सुमिरि सारंगधर, आनिहि सिद्धि सकेलि॥ १॥

प्रभुने मस्तकपर हाथ रखा, (उनकी) अँगूठी मुखमें रखकर उन शार्ङ्गधनुषधारीका स्मरण करके (हनुमान्‌जी) चले, वे सफलताओंको समेट लायेंगे॥ १॥ (यात्राके लिये उत्तम प्रश्न-फल है।)

संग नील नल कुमुद गद जामवंत जुबराज।
चले राम पद नाइ सिर, सगुन सुमंगल साज॥ २॥

साथमें नील, नल, कुमुद, गद, जाम्बवान् और युवराज अंगद श्रीरामके चरणोंमें मस्तक झुकाकर चले। यह शकुन कल्याण देनेवाला है॥ २॥

पैठि बिबर मिलि तापसिहि अँचइ पानि फलु खाइ।
सगुन सिद्ध साधक दरस अभिमत होइ अघाइ॥ ३॥

(हनुमान्‌जी आदि वानर वीर) गुफामें प्रविष्ट होकर तपस्विनीसे मिले, वहाँ जल पिया और फल खाये। इस शकुनका फल है कि किसी साधकका दर्शन होगा और अभीष्ट कार्य पूर्ण-रूपसे सफल होगा॥ ३॥

बनचर बिकल बिषाद बस, देखि उदधि अवगाह।
असमंजस बढ़ सगुन गत, बिधि बस होइ निबाह॥ ४॥

अथाह समुद्रको देखकर सभी वानर दुःखसे व्याकुल हो गये। शकुनका फल यह है कि जो भारी कठिनाई आयी है, वह बीत जायगी और भाग्यवश उससे छुटकारा हो जायगा॥ ४॥

सब सभीत संपाति लखि, हहरे हृदयँ हरास।
कहत परस्पर गीध गति, परिहरि जीवन आस॥ ५॥

सम्पाती गीधको देखकर सभी (वानर) डर गये; हृदयमें निराशासे खिन्न हो गये। जीवित रहनेकी आशा छोड़कर परस्पर जटायुकी सद्गतिका वर्णन करने लगे॥ ५॥ (अकस्मात् भय प्राप्त होगा।)

नव तनु पाइ देखाइ प्रभु महिमा कथा सुनाइ।
धरहु धीर साहस करहु मुदित सीय सुधि पाइ॥ ६॥

नवीन शरीर पाकर, प्रभुकी महिमा (प्रत्यक्ष) दिखलाकर तथा (अपनी) कथा* सुनाकर सम्पातीने कहा—'धैर्य धारण करो। साहस बटोरो। सीताजीका समाचार पाकर प्रसन्न होगे'॥ ६॥ (कठिनाईसे पार होनेका मार्ग मिलेगा।)

तुलसी राम प्रभाउ कहि मुदित चले संपाति।
सुभ तीसर उनचास भल सगुन सुमंगल पाँति॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामके प्रभावका वर्णन करके सम्पाती प्रसन्न होकर चले गये। तीसरे सर्गका यह उनचासवाँ दोहा उत्तम शकुन है, आनन्द-मङ्गलकी पंक्ति (बहुत ही कल्याणकारी) है॥ ७॥

---

* गरुड़जीके बड़े भाई अरुणके दो पुत्र थे—सम्पाती और जटायु। ये दोनों भाई बलके गर्वसे सूर्यका स्पर्श करने ऊपर उड़े। सूर्यका प्रचण्ड ताप सहन न होनेसे जटायु तो लौट आये; किन्तु उनके बड़े भाई सम्पाती ऊपर उड़ते ही गये। अन्तमें उनके पंख भस्म हो गये। वे गिर पड़े। संयोगवश उन्हें एक चन्द्रमा नामके मुनिने देख लिया। मुनिने उन्हें आश्वासन दिया कि श्रीरामके दूत जब सीताजीको ढूँढ़ते यहाँ आयेंगे तब उनके दर्शनसे तुम्हारे ये पंख फिर उग जायँगे, वानरोंके दर्शनसे सम्पातीके पंख उग आये।

चतुर्थ सर्ग

सप्तक—१

राम जनम सुभ सगुन भल सकल सुकृत सुख सारु।
पुत्र लाभ कल्यानु बड़, मंगल चारु बिचारु॥ १॥

श्रीरामका जन्म उत्तम शुभ शकुन है, समस्त पुण्योंका तथा सुखोंका सार है। पुत्रकी प्राप्ति होगी, परम कल्याण होगा, सुन्दर मङ्गल समझो॥ १॥

दसरथ कुल गुरु की कृपाँ सुत हित जाग कराइ।
पायस पाइ बिभाग करि रानिन्ह दीन्ह बुलाइ॥ २॥

महाराज दशरथने कुलगुरु (वसिष्ठजी) की कृपासे पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर (प्रसादरूपमें) खीर पाकर; रानियोंको बुलाकर उसका विभाग करके उन्हें दे दिया॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सब सगरभ सोहहिं सदन सकल सुमंगल खानि।
तेज प्रताप प्रसन्नता रूप न जाहिं बखानि॥ ३॥

सब रानियाँ गर्भवती होकर (अयोध्याके) राजमहलमें सुशोभित हो रही हैं। वे समस्त शुभ मङ्गलोंकी खानें (निवासभूता) हैं। उनके तेज, प्रताप, आनन्द और सौन्दर्यका वर्णन नहीं किया जा सकता॥ ३॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

देखि सुहावन सपन सुभ सगुन सुमंगल पाइ।
कहहिं भूप सन मुदित मन हर्ष न हृदयँ समाइ॥ ४॥

सुहावना स्वप्न देखकर तथा मङ्गलमय शकुन पाकर प्रसन्न मनसे (रानियाँ उसका वर्णन) महाराज (दशरथ) से कहती हैं, प्रसन्नता हृदयमें समाती नहीं (बाहर फूटी पड़ती है)॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सपन सगुन सुनि राउ कह कुलगुरु आसिरबाद।
पूजिहि सब मन कामना, संकर गौरि प्रसाद॥ ५॥

(रानियोंका) स्वप्न तथा शकुन सुनकर महाराज दशरथजी कहते हैं—(यह सब) कुलगुरु (वसिष्ठजी) का आशीर्वाद है। श्रीशङ्करजी तथा पार्वतीजीकी कृपासे मनकी सब अभिलाषा पूर्ण होगी॥ ५॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

मास पाख तिथि जोग सुभ नखत लगन ग्रह बार।
सकल सुमंगल मूल जग राम लीन्ह अवतार॥ ६॥

जिस समय समस्त श्रेष्ठ कल्याणोंके मूल श्रीरामने संसारमें अवतार लिया, उस समय महीना, पक्ष, तिथि, योग, नक्षत्र, लग्न, ग्रह तथा दिन—सभी शुभ थे॥ ६॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

भरत लखन रिपुदवन सब सुवन सुमंगल मूल।
प्रगट भए नृप सुकृत फल तुलसी बिधि अनुकूल॥ ७॥

भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न—ये सब श्रेष्ठ मङ्गलोंके मूलस्वरूप पुत्र महाराज दशरथके पुण्योंके फलस्वरूप प्रकट हुए। तुलसीदासजी कहते हैं कि (इस शकुनद्वारा सूचित होता है कि) विधाता (भाग्य) अनुकूल है॥ ७॥

सप्तक—२

घर घर अवध बधावने, मुदित नगर नर नारि।
बरषि सुमन हरषहिं बिबुध, बिधि त्रिपुरारि मुरारि॥ १॥

अयोध्याके प्रत्येक घरमें बधाई बज रही है। नगरके नर-नारी सब आनन्दित हैं। पुष्प-वर्षा करके देवता, ब्रह्माजी, शङ्करजी और विष्णुभगवान् प्रसन्न हो रहे हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

मंगल गान निसान नभ, नगर मुदित नर नारि।
भूप सुकृत सुरतरु निरखि फरे चारु फल चारि॥ २॥

आकाशमें (देवताओंद्वारा) मङ्गल-गान हो रहा है तथा नगारे बज रहे हैं, नगरके स्त्री-पुरुष महाराज दशरथके पुण्यरूपी कल्पवृक्षमें (पुत्ररूपी) चार सुन्दर फल लगे देखकर आनन्दमग्र हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

पुत्र काज कल्यान नृप दिए दान बहु भाँति।
रहस बिबस रनिवास सब मुद मंगल दिन राति॥ ३॥

पुत्रोंके कल्याणके लिये महाराजने बहुत प्रकारसे दान दिये। पूरा रनिवास आनन्दमें मग्न है। दिन-रात आनन्द-मङ्गल हो रहा है॥ ३॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

अनुदिन अवध बधावने, नित नव मंगल मोद।
मुदित मातु पितु लोग लखि रघुबर बाल बिनोद॥ ४॥

अयोध्यामें प्रतिदिन बधाईके बाजे बज रहे हैं। नित्य नवीन आनन्द-मङ्गल हो रहा है। श्रीरघुनाथजीकी बालक्रीड़ा देखकर माताएँ, पिता तथा सब लोग प्रसन्न होते हैं॥ ४॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

करनबेध चूड़ाकरन लौकिक बैदिक काज।
गुरु आयसु भूपति करत मंगल साज समाज॥ ५॥

गुरुदेवकी आज्ञासे महाराज मङ्गल-साज सजाकर कर्णवेध, चूड़ाकरण (मुण्डन) आदि लौकिक-वैदिक विधियोंसहित वे समाजके साथ करते हैं॥ ५॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

राज अजिर राजत रुचिर कोसल पालक बाल।
जानु पानि चर चरित बर सगुन सुमंगल माल॥ ६॥

राजभवनके आँगनमें कोसलनरेश महाराज दशरथके

सुन्दर बालक घुटनों तथा हाथोंके बल चलते एवं सुन्दर चरित (क्रीड़ा) करते सुशोभित होते हैं। यह शकुन सुमङ्गलोंकी माला (सदा कल्याणकारी) है॥ ६॥

लहे मातु पितु भाग बस सुत जग जलधि ललाम।
पुत्र लाभ हित सगुन सुभ, तुलसी सुमिरहु राम॥ ७॥

माता-पिताने सौभाग्यवश संसार-सागरमें रत्नस्वरूप पुत्र पाये। तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामका स्मरण करो, यह शकुन पुत्र-प्राप्तिके लिये शुभ है॥ ७॥

सप्तक—३

बाल बिभूषन बसन धर, धूरि धूसरित अंग।
बालकेलि रघुबर करत बाल बंधु सब संग॥ १॥

श्रीरघुनाथजी बालकोपयुक्त आभूषण और वस्त्र पहिने बालक्रीड़ा कर रहे हैं। उनका शरीर धूलिसे सना है और साथमें छोटे भाई तथा अन्य बालक हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

राम भरत लछिमन ललित सत्रुसमन सुभ नाम।
सुमिरत दसरथ सुवन सब पूजिहिं सब मन काम॥ २॥

श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न—ये सुन्दर शुभ नाम हैं। महाराज दशरथके इन पुत्रोंका स्मरण करनेसे सभी मनोकामनाएँ पूरी होंगी॥ २॥

नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ।
ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ॥ ३॥

श्रीरघुनाथजीका नाम सुन्दर है, लीलाएँ सुन्दर हैं, स्वरूप सुन्दर है, वस्त्र सुन्दर हैं, आभूषण सुन्दर हैं तथा छोटे भाई

एवं साथके बालक भी सुन्दर हैं॥ ३॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सुदिन साधि मंगल किए, दिए भूप ब्रतबंध।
अवध बधाव बिलोकि सुर बरषत सुमन सुगंध॥ ४॥

महाराज दशरथने शुभ दिन शोधकर मङ्गल-कार्य करके (पुत्रोंका) यज्ञोपवीत-संस्कार कराया। अयोध्यामें बधाईके बाजे बजते देख देवता सुगन्धित पुष्पोंकी वर्षा कर रहे हैं॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

भूपति भूसुर भाट नट जाचक पुर नर नारि।
दिए दान सनमानि सब, पूजे कुल अनुहारि॥ ५॥

महाराजने ब्राह्मण, भाट, नट, भिक्षुक तथा नगरके सभी स्त्री-पुरुषोंको उनके कुलके अनुसार सम्मानपूर्वक दान देकर उनकी पूजा की॥ ५॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

सखीं सुआसिनि बिप्रतिय सनमानीं सब रायँ।
ईस मनाय असीस सुभ देहिं सनेह सुभायँ॥ ६॥

महाराजने (रानियोंकी) सखियों, सौभाग्यवती स्त्रियों तथा ब्राह्मणोंकी स्त्रियों—सबका सम्मान किया। वे स्वाभाविक प्रेमवश ईश्वरको मनाकर शुभाशीर्वाद देती हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

राम काज कल्यान सब सगुन सुमंगल मूल।
चिर जीवहु तुलसीस सब, कहि सुर बरषहिं फूल॥ ७॥

श्रीरामचन्द्रजीके कल्याणके लिये सभी सुमङ्गलोंके मूल (अत्यन्त कल्याणकारी) शकुन हो रहे हैं। तुलसीदासके सब स्वामी (चारों भाई) चिरंजीवी हों, यह कहकर देवता पुष्पवर्षा कर रहे हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—४

राम जनम सुभ काज सब कहत देवरिषि आइ।
सुनि सुनि मन हनुमान के प्रेम उमँग न अमाइ॥ १॥

देवर्षि नारदजी आकर श्रीरामके अवतारसे होनेवाले सभी शुभ-कार्योंका वर्णन करते हैं। उनकी चर्चा बार-बार (किष्किन्धामें) सुनकर हनुमान्‌जीके मनमें प्रेमकी उमंग समाती नहीं॥ १॥ (प्रियजनका संवाद मिलेगा।)

भरतु स्यामतन राम सम, सब गुन रूप निधान।
सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब कल्यान॥ २

श्रीभरतजी श्रीरघुनाथजीके समान ही साँवले शरीरवाले और समस्त गुणों तथा रूपके खजाने हैं। वे सेवकोंको सुख देनेवाले हैं। उनका स्मरण करनेसे सभी कल्याण सुलभ हो जाते हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

ललित लाहु लोने लखनु, लोयन लाहु निहारि।
सुत ललाम लालहु ललित, लेहु ललकि फल चारि॥ ३॥

परम सुन्दर श्रीलक्ष्मणजीके प्रिय-मिलन (दर्शन) को नेत्र पानेका लाभ समझो (यह शकुन कहता है कि) सुन्दर पुत्ररत्न (पाकर) उसका लालन-पालन करो और समुत्सुक बनकर चारों फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्राप्त करो॥ ३॥

मंगल मूरति मोद निधि, मधुर मनोहर बेष।
राम अनुग्रह पुत्र फल होइहि सगुन बिसेष॥ ४॥

मङ्गलकी मूर्ति, आनन्दनिधि, मधुरिमामय मनोहर रूपवाले श्रीरघुनाथजीकी कृपासे पुत्र होगा, यह इस शकुनका विशेष फल है॥ ४॥

सोधत मख महि जनकपुर सीय सुमंगल खानि।
भूपति पुन्य पयोधि जनु रमा प्रगट भइ आनि॥ ५॥

यज्ञ-भूमि शुद्ध करते समय जनकपुरमें श्रेष्ठ मङ्गलोंकी खानि सीताजी इस प्रकार प्रकट हुईं, मानो महाराज जनकके पुण्यरूपी समुद्रसे निकलकर लक्ष्मी प्रकट हो गयी हों॥ ५॥ (कन्याकी प्राप्ति होगी।)

नाम सत्रुसूदन सुभग सुषमा सील निकेत।
सेवत सुमिरत सुलभ सुख सकल सुमंगल देत॥ ६॥

सौन्दर्य एवं शीलके भवन शत्रुघ्नजीका नाम मनोहर है, उनकी सेवा एवं स्मरणमें बड़ी सुगमता है और वे सम्पूर्ण सुख एवं कल्याण प्रदान करते हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

बालक कोसलपाल के सेवक पाल कृपाल।
तुलसी मन मानस बसत मंगल मंजु मराल॥ ७॥

कोसलनरेश (महाराज दशरथ) के कृपालु पुत्र सेवकोंका पालन करनेवाले हैं। तुलसीदासके मनरूपी मानसरोवरमें वे मङ्गलमय सुन्दर हंसोंके समान निवास करते हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सप्तक—५

जनकनंदिनी जनकपुर जब तें प्रगटीं आइ।
तब तें सब सुखसंपदा अधिक अधिक अधिकाइ॥ १॥

जबसे जनकपुरमें श्रीसीताजी आकर प्रकट हुईं, तबसे वहाँ सभी सुख एवं सम्पत्तियाँ दिनोदिन अधिकाधिक बढ़ती जाती हैं॥ १॥ (यह शकुन सुख-सम्पत्तिकी प्राप्ति तथा उन्नतिकी सूचना देता है।)

सीय स्वयंबर जनकपुर सुनि सुनि सकल नरेस।
आए साज समाज सजि भूषन बसन सुदेस॥ २॥

सीताजीके स्वयंवरका समाचार सुनकर सभी राजा आभूषण और वस्त्रोंसे भली प्रकार सजकर, अपना समाज सजाकर जनकपुर आये॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

चले मुदित कौसिक अवध सगुन सुमंगल साथ।
आए सुनि सनमानि गृहँ आने कोसलनाथ॥ ३॥

महर्षि विश्वामित्र प्रसन्न होकर अयोध्या चले। श्रेष्ठ मङ्गलदायक शकुन उनके साथ-साथ चल रहे थे—मार्गमें होते जाते थे। महाराज दशरथ उनका आगमन सुनकर (आगे जाकर) आदरपूर्वक उन्हें राजभवनमें ले आये॥ ३॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

सादर सोरह भाँति नृप पूजि पहुनई कीन्हि।
बिनय बड़ाई देखि मुनि अभिमत आसिष दीन्हि॥ ४॥

महाराज दशरथने आदरपूर्वक षोडशोपचारसे (विश्वामित्रजीका) पूजन करके आतिथ्य सत्कार किया। (महाराजका) विनम्रभाव तथा सम्मान देखकर मुनि (विश्वामित्रजी) ने अभीष्ट आशीर्वाद दिया॥ ४॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

मुनि माँगे दसरथ दिए रामु लखनु दोउ भाइ।
पाइ सगुन फल सुकृत फल प्रमुदित चले लेवाइ॥ ५॥

मुनिके माँगनेपर महाराज दशरथने उन्हें श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाइयोंको सौंप दिया। (पहिले हुए) शकुनोंका फल तथा अपने पुण्योंका फल पा अत्यन्त प्रसन्न हो (मुनि दोनों भाइयोंको) साथ ले चले॥ ५॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

स्यामल गौर किसोर बर धरें तून धनु बान।
सोहत कौसिक सहित मग मुद मंगल कल्यान॥ ६॥

साँवले और गोरे श्रेष्ठ किशोर (दोनों भाई) तरकश और धनुष-बाण लिये विश्वामित्रजीके साथ मार्गमें ऐसे सुशोभित हैं, मानो (मूर्तिमान्) आनन्द, मङ्गल एवं कल्याण हों॥ ६॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सैल सरित सर बाग बन, मृग बिहंग बहुरंग।
तुलसी देखत जात प्रभु मुदित गाधिसुत संग॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि प्रभु पर्वत, नदी, सरोवर, वन, उपवन तथा अनेक रंगोंके पशु-पक्षी देखते हुए आनन्दित हो विश्वामित्रजीके साथ जा रहे हैं॥ ७॥ (यात्रा सुखद होगी।)

सप्तक—६

लेत बिलोचन लाभु सब बड़भागी मग लोग।
राम कृपाँ दरसनु सुगम, अगम जाग जप जोग॥ १॥

मार्गके सब लोग बड़े भाग्यशाली हैं, वे नेत्रोंका लाभ (श्रीरामका दर्शन) पा रहे हैं—जो (श्रीरामका) दर्शन यज्ञ, जप तथा योगद्वारा भी अगम्य है, परन्तु श्रीरामकी कृपासे सुगम (सुलभ) हो जाता है॥ १॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

जलद छाँह मृदु मग अवनि सुखद पवन अनुकूल।
हरषत बिबुध बिलोकि प्रभु बरषत सुरतरु फूल॥ २॥

बादल छाया कर रहे हैं, मार्गकी भूमि कोमल हो गयी है, सुखदायी अनुकूल वायु चल रही है। प्रभुको देखकर देवता प्रसन्न हो रहे हैं और कल्पवृक्षके पुष्पोंकी वर्षा कर रहे हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

दले मलिन खल राखि मख, मुनि सिष आसिष दीन्ह।
बिद्या बिस्वामित्र सब सुथल समरपित कीन्हि॥ ३॥

(प्रभुनें) दुष्ट राक्षसोंको नष्ट कर दिया और इस प्रकार यज्ञकी रक्षा की। मुनि विश्वामित्रजीने उन्हें शिक्षा और आशीर्वाद दिया तथा पुण्यस्थलमें सारी विद्याएँ दान की॥ ३॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

अभय किए मुनि राखि मख, धरें बान धनु हाथ।
धनु मख कौतुक जनकपुर चले गाधिसुत साथ॥ ४॥

हाथमें धनुष-बाण लेकर (प्रभुने) यज्ञकी रक्षा की और मुनियोंको निर्भय कर दिया। फिर वे विश्वामित्रजीके साथ धनुष-यज्ञकी क्रीड़ा देखने जनकपुर चले॥ ४॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

गौतम तिय तारन चरन कमल आनि उर देखु।
सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल सगुन बिसेषु॥ ५॥

गौतम मुनिकी पत्नी (अहल्या) का उद्धार करनेवाले चरणोंको हृदयमें लाकर देखो (हृदयमें उनका ध्यान करो)। यह शकुन विशेषरूपसे सूचित करता है कि सब प्रकारका परम कल्याण तथा सारी सफलता हाथमें (प्राप्त ही) समझो॥ ५॥

जनक पाइ प्रिय पाहुने पूजे पूजन जोग।
बालक कोसलपाल के देखि मगन पुर लोग॥ ६॥

महाराज जनकने पूजा करनेयोग्य प्रिय अतिथियोंको पाकर उनका पूजन किया। कोसलनरेश (महाराज दशरथ) के कुमारोंको देखकर नगरवासी आनन्दमग्न हो रहे हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सनमाने आने सदन पूजे अति अनुराग।
तुलसी मंगल सगुन सुभ भूरि भलाई भाग॥ ७॥

महाराज जनक श्रीराम-लक्ष्मणसहित विश्वामित्रजीको सम्मानपूर्वक राजभवनमें ले आये और अत्यन्त प्रेमपूर्वक उनकी पूजा की। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह शुभ शकुन मङ्गलकारी है, भाग्यमें बहुत अधिक बड़ाई है॥ ७॥

सप्तक—७

कौसिक देखन धनुष मख चले संग दोउ भाइ।
कुँअर निरखि पुर नारि नर मुदित नयन फल पाइ॥ १॥

विश्वामित्रजी दोनों भाइयोंके साथ धनुषयज्ञ देखने चले। दोनों कुमारोंको देखकर नगरके स्त्री-पुरुष नेत्रोंका फल पाकर प्रसन्न हो रहे हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

भूप सभाँ भव चाप दलि राजत राजकिसोर।
सिद्धि सुमंगल सगुन सुभ जय जय जय सब ओर॥ २॥

राजाओंकी सभामें शङ्करजीके धनुषको तोड़कर (अयोध्याके) राजकुमार (श्रीराम) शोभित हो रहे हैं। सब ओर उनकी जय-जयकार हो रही है। यह शुभ शकुन सफलतादायक एवं परम कल्याणकारी है॥ २॥

जयमय मंजुल माल उर मंगल मूरति देखि।
गान निसान प्रसून झरि मंगल मोद बिसेषि॥ ३॥

विजयसूचक मनोहर जयमाला वक्षःस्थलपर धारण किये (श्रीरामकी) मङ्गलमयी मूर्ति देखकर मङ्गलगान तथा पुष्पवर्षा हो रही है और नगारे बज रहे हैं, अत्यन्त आनन्द-

मङ्गल हो रहा है॥ ३॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

समाचार सुनि अवधपति आए सहित समाज।
प्रीति परस्पर मिलत मुद, सगुन सुमंगल साज॥ ४॥

समाचार सुनकर अयोध्यानाथ (महाराज दशरथ) बरातके साथ आये। दोनों नरेश प्रेमपूर्वक एक-दूसरेसे मिलते हुए बड़े ही आनन्दका अनुभव कर रहे हैं। यह शकुन परम मङ्गलकारी है॥ ४॥

गान निसान बितान बर बिरचे बिबिध बिधान।
चारि बिबाह उछाह बड़, कुसल काज कल्यान॥ ५॥

मङ्गलगान हो रहा है, नगारे बज रहे हैं, अनेक प्रकारकी कारीगरीसे युक्त श्रेष्ठ मण्डप बनाये गये हैं, (एक साथ) चार विवाह होनेसे बड़ा उत्सव हो रहा है। (यह शकुन) कुशलपूर्वक विवाह-कार्यको पूर्ण करनेवाला है॥ ५॥

दाइज पाइ अनेक बिधि सुत सुतबधुन समेत।
अवधनाथु आए अवध सकल सुमंगल लेत॥ ६॥

अनेक प्रकारका दहेज पाकर पुत्र और पुत्रवधुओंके साथ अयोध्यानाथ (महाराज दशरथ) समस्त सुमङ्गल प्राप्त करके अयोध्या लौटे॥ ६॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

चौथ चारु उनचास पुर घर घर मंगलचार।
तुलसिहि सब दिन दाहिने दसरथ राजकुमार॥ ७॥

(अयोध्यामें) घर-घर मङ्गलाचार हो रहा है। तुलसीदासजी कहते हैं कि चौथे सर्गका उनचासवाँ दोहा शुभ है, दशरथकुमार (श्रीराम) सब समय अनुकूल हैं॥ ७॥

पञ्चम सर्ग

सप्तक—१

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु।
सगुन सुमंगल मूल जग गुरु पद पंकज रेनु॥ १॥

कलियुगमें श्रीराम-नाम कल्पवृक्ष (मनचाहा वस्तु देनेवाला) है और रामभक्ति कामधेनु है। गुरुदेवके चरणकमलोंकी धूलि जगत्में सारे शुभ शकुनों तथा कल्याणोंकी जड़ है॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

जलधि पार मानस अगम रावन पालित लंक।
सोच बिकल कपि भालु सब, दुहुँ दिसि संकट संक॥ २॥

समुद्रके पार मनसे भी अगम्य रावणद्वारा पालित लङ्का नगरी है। सारे वानर-भालू इस चिन्तासे व्याकुल हो रहे हैं कि दोनों ओर (समुद्रपार होनेमें और बिना कार्य पूरा किये लौटनेमें) शङ्का और विपत्ति है॥ २॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

जामवंत हनुमान बलु कहा पचारि पचारि।
राम सुमिरि साहसु करिय, मानिय हिएँ न हारि॥ ३॥

जाम्बवन्तजीने बार-बार ललकारकर हनुमान्‌जीके बलका वर्णन किया। (प्रश्न-फल यह है कि) श्रीरामका स्मरण करके साहस करो। हृदयमें हार मत मानो। (हताश मत हो।) ॥ ३॥

राम काज लगि जनमु जग, सुनि हरषे हनुमान।
होइ पुत्र फलु सगुन सुभ, राम भगतु बलवान॥ ४॥

'तुम्हारा संसारमें जन्म ही श्रीरामका कार्य करनेके लिये हुआ है' यह सुनकर हनुमान्‌जी प्रसन्न हो गये। यह शकुन शुभ है, इसका फल यह है कि श्रीरामभक्त बलवान् पुत्र

होगा॥ ४॥

कहत उछाहु बढ़ाइ कपि साथी सकल प्रबोधि।
लागत राम प्रसाद मोहि गोपद सरिस पयोधि॥ ५॥

सभी साथियोंको आश्वासन देकर उनका उत्साह बढ़ाते हुए हनुमान्‌जी कहते हैं—'श्रीरामकी कृपासे समुद्र मुझे गायके खुरसे बने गड्ढेके समान लगता है'॥ ५॥ (प्रश्न-फल शुभ है, कठिनाई दूर होगी।)

राखि तोषि सबु साथ सुभ, सगुन सुमंगल पाइ।
कूदि कुधर चढ़ि आनि उर, सीय सहित दोउ भाइ॥ ६॥

साथके सब लोगोंको वहीं रखकर (रहनेको कहकर) तथा सन्तोष देकर उत्तम मङ्गलकारी शकुन पाकर, श्रीजानकीजीके साथ दोनों भाई (श्रीराम-लक्ष्मण) को हृदयमें ले आकर (स्मरण करके) कूदकर (हनुमान्‌जी) पर्वतपर चढ़ गये॥ ६॥ (यात्राके लिये शुभ शकुन है।)

हरषि सुमन बरषत बिबुध, सगुन सुमंगल होत।
तुलसी प्रभु लंघेउ जलधि प्रभु प्रताप करि पोत॥ ७॥

देवता प्रसन्न होकर पुष्पवर्षा कर रहे हैं, श्रेष्ठ मङ्गलकारी शकुन हो रहे हैं। तुलसीदासजीके स्वामी (हनुमान्‌जी) प्रभु श्रीरामके प्रतापको जहाज बनाकर (श्रीरामके प्रतापसे) समुद्र कूद गये॥ ७॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

सप्तक—२

राहु मातु माया मलिन मारी मारुत पूत।
समय सगुन मारग मिलहिं, छल मलीन खल धूत॥ १॥

माया करनेवाली मलिन (कपटसे भरी) राहुकी माता सिंहिकाको श्रीपवनकुमारने मार दिया। यह शकुन कहता है

कि यात्राके समय मार्गमें कपटी, पापी, दुष्ट और धूर्त मिलेंगे (उनसे सावधान रहना चाहिये।) ॥ १ ॥

पूजा पाइ मिनाक पहिं सुरसा कपि संबादु।
मारग अगम सहाय सुभ होइहि राम प्रसादु॥ २॥

मैनाक पर्वतसे सत्कार पाकर आगे जाते हुए हनुमान्‌जीसे (नागमाता) सुरसाकी बातचीत हुई। (शकुन-फल यह है कि) श्रीरामकी कृपासे विकट मार्गमें भी शुभ सहायता प्राप्त होगी॥ २॥

लंकाँ लोलुप लंकिनी काली काल कराल।
काल करालहि कीन्हि बलि कालरूप कपि काल॥ ३॥

कालके समान भयंकर एवं काली, लोभमूर्ति लङ्किनी राक्षसी लङ्कामें (प्रवेश करते ही) मिली, उसे कालरूप बनकर स्वयं भी कालरूप (भयंकर वेश) धारी हनुमान्‌जीने भयंकर काल (मृत्यु) के बलि अर्पण कर दिया (मार डाला)॥ ३॥ (कार्यमें आयी बाधा नष्ट होगी।)

मसक रूप दसकंध पुर निसि कपि घर घर देखि।
सीय बिलोकि असोक तर हरष बिसाद बिसेषि॥ ४॥

मच्छरके समान (छोटा) रूप धारण करके हनुमान्‌जीने रात्रिमें रावणकी पुरी लङ्काका एक-एक घर छान डाला। (अन्तमें) श्रीजानकीजीको अशोकवृक्षके नीचे देखकर उन्हें प्रसन्नता और अत्यधिक दुःख दोनों हुए॥ ४॥ (प्रश्न-फल मध्यम है, हर्ष-शोक दोनोंका सूचक है।)

फरकत मंगल अंग सिय बाम बिलोचन बाहु।
त्रिजटा सुनि कह सगुन फल, प्रिय सँदेस बड़ लाहु॥ ५॥

श्रीजानकीजीके मङ्गलसूचक अङ्ग बायीं आँख और भुजा फड़क रही हैं। इसे सुनकर त्रिजटा शकुनका फल

बतलाती है कि 'प्रियतमके सन्देशकी प्राप्तिरूपी बड़ा लाभ होगा'॥ ५॥ (प्रियजनका समाचार मिलेगा।)

सगुन समुझि त्रिजटा कहति, सुनु सिय अबहीं आजु।
मिलिहि राम सेवक कहिहि कुसल लखनु रघुराजु॥ ६॥

शकुनको समझकर त्रिजटा कहती है—'जानकीजी! सुनो। आज (अभी) श्रीरामका सेवक मिलेगा और लक्ष्मण तथा रघुनाथजीकी कुशल कहेगा॥ ६॥ (प्रियजनका कुशल-समाचार प्राप्त होगा।)

तुलसी प्रभु गुन गन बरनि आपनि बात जनाइ।
कुसल खेम सुग्रीव पुर रामु लखनु दोउ भाइ॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि (हनुमान्‌जीने श्रीजानकीजीसे) प्रभु श्रीरामके गुणोंका वर्णन करके अपनी बात जनायी (अपना परिचय दिया और कहा—) 'सुग्रीवकी नगरी (किष्किन्धा) में श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाई कुशलपूर्वक हैं'॥ ७॥ (प्रियजनका समाचार मिलेगा।)

सप्तक—३

सुरुख जानकी जानि कपि कहे सकल संकेत।
दीन्हि मुद्रिका लीन्हि सिय प्रीति प्रतीति समेत॥ १॥

श्रीजानकीजीको प्रसन्न समझकर हनुमान्‌जीने सब संकेत (श्रीरामका गुप्त सन्देश) कहा और मुद्रिका दी, उसे श्रीजानकीजीने प्रेम तथा विश्वासपूर्वक लिया॥ १॥ (दुःखके समय आश्वासन प्राप्त होगा।)

पाइ नाथ कर मुद्रिका सिय हियँ हरषु बिषादु।
प्राननाथ प्रिय सेवकहि दीन्ह सुआसिरबादु॥ २॥

स्वामीके हाथकी अँगूठी पाकर श्रीजानकीजीके चित्तमें

प्रसन्नता तथा शोक दोनों हुए, प्राणनाथके प्रिय सेवक (श्रीहनुमान्‌जी) को उन्होंने शुभ आशीर्वाद दिया॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

नाथ सपथ पन रोपि कपि कहत चरन सिरु नाइ।
नहिं बिलंब जगदंब अब आइ गए दोउ भाइ॥ ३॥

स्वामी श्रीरामकी शपथ करके प्रतिज्ञापूर्वक हनुमान्‌जी (श्रीजानकीजीके) चरणोंमें मस्तक झुकाकर कहते हैं—जगन्माता! अब देर नहीं है, दोनों भाई आ ही गये (ऐसा मानो)॥ ३॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

समाचार कहि सुनत प्रभु सानुज सहित सहाय।
आए अब रघुबंस मनि, सोचु परिहरिय माय॥ ४॥

(मैं लौटकर) समाचार कहूँगा, उसे सुनते ही प्रभु श्रीरघुनाथजी छोटे भाई तथा सहायकों (वानरी सेना) के साथ यह पहुँच ही गये (ऐसा मानकर) माता! चिन्ता त्याग दो॥ ४॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

गए सोच संकट सकल, भए सुदिन जियँ जानु।
कौतुक सागर सेतु करि आए कृपा निधानु॥ ५॥

सभी चिन्ता और विपत्तियाँ दूर हो गयीं, अच्छे दिन आ गये—ऐसा चित्तमें समझो। खेलमें ही समुद्रपर सेतु बाँधकर कृपानिधान श्रीराम आ गये॥ ५॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सकुल सदल जमराजपुर चलन चहत दसकंधु।
काल न देखत काल बस बीस बिलोचन अंधु॥ ६॥

रावण अपने पूरे कुल और सारी सेनाके साथ यमलोक जाना चाहता है। बीस नेत्र होनेपर भी ऐसा अन्धा हो गया है कि अपना काल (मृत्यु) देख नहीं पाता॥ ६॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

आसिष आयसु पाय कपि सीय चरनु सिर नाइ।
तुलसी रावन बाग फल खात बराइ बराइ॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं—आशीर्वाद और आज्ञा पाकर, श्रीजानकीजीके चरणोंमें मस्तक झुकाकर हनुमान्‌जी रावणके बगीचेमें छाँट-छाँटकर फल खा रहे हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सप्तक—४

सूर सिरोमनि साहसी सुमति समीर कुमार।
सुमिरत सब सुख संपदा मुद मंगल दातार॥ १॥

शूरशिरोमणि, साहसी, बुद्धिमान् श्रीपवनकुमार स्मरण किये जानेपर सब प्रकारके सुख, सम्पत्ति और आनन्द-मङ्गलके देनेवाले हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

सत्रुसमन पदपंकरुह सुमिरि करहु सब काज।
कुसल खेम कल्यान सुभ सगुन सुमंगल साज॥ २॥

शत्रुघ्नजीके चरण-कमलोंका स्मरण करके सब कार्य करो। कुशल-क्षेम रहेगा, कल्याण होगा। यह शुभ शकुन सुन्दर मङ्गलका सृष्टि करनेवाला है॥ २॥

भरत भलाई की अवधि, सील सनेह निधान।
धरम भगति भायप समय, सगुन कहब कल्यान॥ ३॥

श्रीभरतलालजी अच्छाईकी सीमा, शील और स्नेहके निधान, धर्मात्मा, भ्रातृभावसे भक्ति करनेवाले हैं। इस समयका शकुन कल्याण सूचित करता है॥ ३॥

सेवकपाल कृपाल चित रबि कुल कैरव चंद।
सुमिरि करहु सब काज सुभ, पग पग परमानंद॥ ४॥

सेवकोंकी रक्षा करनेवाले, दयालुहृदय, सूर्यवंशरूपी

कुमुदिनीके लिये (आह्लादकारी) चन्द्रमाके समान श्रीरघुनाथजीका स्मरण करके सब काम करो। परिणाममें शुभ होगा, पद-पदपर (सदा) परम आनन्द होगा॥ ४॥

सिय पद सुमिरि सुतीय हित सगुन सुमंगल जानु।
स्वामि सोहागिल भाग बड़ पुत्र काजु कल्यानु॥ ५॥

उत्तम स्त्रियोंके लिये श्रीजानकीजीके चरणोंका स्मरणरूपी शकुन परम मङ्गलकारी समझो। स्वामीका सौभाग्य प्राप्त होगा (सौभाग्यवती रहेंगी), बड़ा (उत्तम) भाग्य है, पुत्र-प्राप्ति होगी तथा कल्याण होगा॥ ५॥

लछिमन पद पंकज सुमिरि, सगुन सुमंगल पाइ।
जय बिभूति कीरति कुसल अभिमत लाभु अघाइ॥ ६॥

श्रीलक्ष्मणजीके चरण-कमलोंका स्मरण करो। यह परम मङ्गलकारी शकुन पा लेनेपर विजय, ऐश्वर्य, कीर्ति, कुशल तथा अभीष्टप्राप्ति भरपूर होगी॥ ६॥

तुलसी कानन कमल बन, सकल सुमंगल बास।
राम भगत हित सगुन सुभ, सुमिरत तुलसीदास॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि तुलसीका वन अथवा कमलवन समस्त उत्तम कल्याणोंका निवास है, उसका स्मरण करना श्रीरामभक्तके लिये शुभ शकुन हैं॥ ७॥

सप्तक—५

रूख निपातत खात फल, रक्षक अक्ष निपाति।
कालरूप बिकराल कपि, सभय निसाचर जाति॥ १॥

कालस्वरूप भयंकर आकृतिवाले हनुमान्‌जी (वनके) रक्षकों तथा अक्षयकुमारको मारकर वृक्षोंको गिरा रहे हैं तथा फल खा रहे हैं (उन्हें देखकर) निशाचरमात्र डर गये

हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

बनु उजारि जारेउ नगर कूदि कूदि कपिनाथ।
हाहाकार पुकारि सब, आरत मारत माथ॥ २॥

श्रीहनुमान्‌जीने अशोकवन उजाड़कर कूद-कूदकर लङ्का जला दी। सब (राक्षस) हाहाकार करके चिल्ला रहे हैं और दुःखी होकर सिर पीट रहे हैं॥ २॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

पूँछ बुताइ प्रबोधि सिय आइ गहे प्रभु पाइ।
खेम कुसल जय जानकी जय जय जय रघुराइ॥ ३॥

पूँछ बुझाकर श्रीजानकीजीको आश्वासन देकर, लौटकर (हनुमान्‌जीने) प्रभु श्रीरामजीका चरण पकड़कर कहा—'श्रीजानकीजी जीवित हैं और कुशलसे हैं, उनकी जय हो! श्रीरघुनाथजीकी जय हो! जय हो!! जय हो!!!'॥ ३॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सुनि प्रमुदित रघुबंस मनि सानुज सेन समेत।
चले सकल मंगल सगुन बिजय सिद्धि कहि देत॥ ४॥

(यह) सुनकर श्रीरघुनाथजी अत्यन्त प्रसन्न हुए एवं छोटे भाई लक्ष्मण तथा सेनाके साथ वे (लङ्काके लिये) चल दिये। (उस समय) सभी मङ्गल शकुन होने लगे, जो विजय और सफलताकी घोषणा कर रहे थे॥ ४॥ (प्रश्न-फल यात्राके लिये शुभ है।)

राम पयान निसान नभ बाजहिं गाजहिं बीर।
सगुन सुमंगल समर जय कीरति कुसल सरीर॥ ५॥

श्रीरामजीके प्रस्थानके समय आकाशमें (देवताओंके) नगारे बज रहे हैं। वीर (वानर) गर्जना कर रहे हैं। यह शकुन मङ्गलकारी है, युद्धमें विजय होगी, कीर्ति मिलेगी, शरीर सकुशल रहेगा॥ ५॥

कृपासिंधु प्रभु सिंधु सन मागेउ पंथ न देत।
बिनय न मानहिं जीव जड़, डाटे नवहिं अचेत॥ ६॥

कृपासागर प्रभुने समुद्रसे (लङ्का जानेका) मार्ग माँगा, पर वह (मार्ग) देता नहीं। मूर्ख प्राणी प्रार्थना करनेसे नहीं मानते, बुद्धिहीन लोग तो डाँटनेसे ही झुकते हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल झगड़ा सूचित करता है।)

लाभु लाभु लोवा कहत, छेमकरी कह छेम।
चलत बिभीषन सगुन सुनि तुलसी पुलकत प्रेम॥ ७॥

'लाभ होगा, लाभ होगा' यह लोमड़ी कह रही है, 'कुशल होगी' यह चील सूचित कर रही है। ये शकुन (श्रीरामकी ओर) चलते समय विभीषणजीको हुए, यह सुनकर तुलसीदास प्रेमसे रोमाञ्चित हो रहा है॥ ७॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

सप्तक—६

पाहि पाहि असरन सरन, प्रनतपाल रघुराज।
दियो तिलक लंकेस कहि राम गरीब नेवाज॥ १॥

(विभीषणने श्रीरामके पास जाकर कहा—) 'हे अशरणशरण! शरणागतरक्षक श्रीरघुनाथजी! रक्षा करो! रक्षा करो!' (यह सुनकर) दीनोंपर कृपा करनेवाले श्रीरामने (विभीषणको) लङ्केश कहकर राजतिलक कर दिया॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

लंक असुभ चरचा चलति हाट बाट घर घाट।
रावन सहित समाज अब जाइहि बारह बाट॥ २॥

लङ्काके बाजारोंमें, मार्गोंपर, घरोंमें तथा घाटोंपर यही अमङ्गल-चर्चा होती रहती है कि 'अब समाजके साथ

रावण नष्ट हो जायगा'॥ २॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

ऊकपात दिकदाह दिन, फेकरहिं स्वान सियार।
उदित केतु गतहेतु महि कंपति बारहि बार॥ ३॥

(लङ्कामें) दिनमें ही उल्कापात होता है, दिशाओंमें अग्निदाह होता है, कुत्ते और सियार रोते हैं, स्वार्थका नाशक धूमकेतु उगता है और बार-बार पृथ्वी काँपती (भूकम्प होता) है॥ ३॥ (प्रश्न-फल महान् अनर्थका सूचक है।)

राम कृपाँ कपि भालु करि कौतुक सागर सेतु।
चले पार बरसत बिबुध सुमन सुमंगल हेतु॥ ४॥

श्रीरामकी कृपासे खेल-ही-खेलमें समुद्रपर सेतु बनाकर वानर-भालु समुद्रपार चले, उनके मङ्गलके लिये देवता पुष्पवर्षा कर रहे हैं॥ ४॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

नीच निसाचर मीचु बस चले साजि चतुरंग।
प्रभु प्रताप पावक प्रबल उड़ि उड़ि परत पतंग॥ ५॥

नीच राक्षस मृत्युके वश होकर चतुरङ्गिणी (पैदल, घुड़सवार, हाथी और रथोंकी) सेना सजाकर चले। प्रभु श्रीरामजीका प्रताप प्रचण्ड अग्निके समान है, जिसमें पतिंगोंके समान ये उड़-उड़कर गिर रहे हैं॥ ५॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

साजि साजि बाहन चलहिं जातुधानु बलवानु।
असगुन असुभ न गनहिं गत आइ कालु नियरानु॥ ६॥

बलवान् राक्षस वाहन (सवारी) सजाकर चलते हैं। अशुभसूचक अपशकुन हो रहे हैं; पर ये उन्हें गिनते नहीं (उनपर ध्यान नहीं देते, क्योंकि) उनकी आयु समाप्त हो गयी है और उनका मृत्यु-काल समीप आ गया है॥ ६॥ (प्रश्न-फल विनाशसूचक है।)

लरत भालु कपि सुभट सब निदरि निसाचर घोर।
सिर पर समरथ राम सो साहिब तुलसी तोर॥७॥

वानर-भालुओंके सभी श्रेष्ठ योधा घोर राक्षसोंकी उपेक्षा करके युद्ध कर रहे हैं; क्योंकि श्रीराम-जैसे सर्वसमर्थ प्रभु उनके सिरपर (रक्षक) हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि वे ही तुम्हारे (मेरे) भी स्वामी हैं॥७॥ (शकुन शत्रुपर विजय सूचित करता है।)

सप्तक—७

मेघनादु अतिकाय भट परे महोदर खेत।
रावन भाइ जगाइ तब कहा प्रसंगु अचेत॥१॥

मेघनाद, अतिकाय, महोदर आदि योधा युद्धभूमिमें मारे गये, तब मूर्ख रावणने अपने भाई कुम्भकर्णको जगाकर सब बातें कहीं॥१॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

उठि बिसाल बिकराल बड़ कुंभकरन जमुहान।
लखि सुदेस कपि भालु दल जनु दुकाल समुहान॥२॥

विशाल शरीरवाले अत्यन्त भयङ्कर कुम्भकर्णने उठकर जम्हाई ली तो ऐसा दीख पड़ा मानो अकाल (मूर्तिमान् होकर) वानर-भालु-सेनारूप उत्तम देशके सामने आ गया है॥२॥ (शकुन अकालसूचक है।)

राम स्याम बारिद सघन बसन सुदामिनि माल।
बरषत सर हरषत बिबुध दला दुकालु दयाल॥३॥

श्रीराम घने काले मेघके समान हैं और उनके वस्त्र विद्युत्-मालाके समान हैं। उनके बाण-वर्षा करनेसे देवता प्रसन्न होते हैं, (इस प्रकार) उन दयालुने अकाल (रूपी) कुम्भकर्णको नष्ट कर दिया॥३॥ (सुवृष्टि होगी, अकाल दूर होगा।)

राम रावनहिं परसपर होति रारि रन घोर।
लरत पचारि पचारि भट समर सोर दुहुँ ओर॥४॥

युद्धमें श्रीराम और रावणके बीच परस्पर भयङ्कर संग्राम हो रहा है। योधा एक-दूसरेको ललकार-ललकारकर युद्ध कर रहे हैं। युद्धमें दोनों दलोमें कोलाहल हो रहा है॥४॥ (प्रश्न-फल कलहसूचक है।)

बीस बाहु दस सीस दलि, खंड खंड तनु कीन्ह।
सुभट सिरोमनि लंकपति पाछे पाउ न दीन्ह॥५॥

(श्रीरामने) रावणकी बीस भुजा तथा दस मस्तक काटकर शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर दिये; किंतु (इतनेपर भी) उस शूर-शिरोमणिने (युद्धसे) पीछे पैर नहीं रखा॥५॥ (प्रश्न-फल पराजयसूचक है।)

बिबुध बजावत दुंदुभी, हरषत बरषत फूल।
राम बिराजत जीति रन सुर सेवक अनुकूल॥६॥

देवता नगारे बजा रहे हैं और प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं। देवताओं तथा सेवकोंके नित्य अनुकूल रहनेवाले श्रीराम युद्धमें जीतकर सुशोभित हो रहे हैं॥६॥ (प्रश्न-फल विजयसूचक है।)

लंका थापि बिभीषनहि बिबुध बसाइ सुबास।
तुलसी जय मंगल कुसल, सुभ पंचम उनचास॥७॥

(प्रभुने) लङ्कामें विभीषणको (राज्य देकर) स्थापित किया और देवताओंको भली प्रकार (निर्भय करके) बसाया। तुलसीदासजी कहते हैं कि पञ्चम सर्गका यह उनचासवाँ दोहा शुभ है, विजय, मङ्गल तथा कुशलका सूचक है॥७॥

षष्ठ सर्ग

सप्तक—१

रघुपति आयसु अमरपति अमिय सींचि कपि भालु।
सकल जिआए सगुन सुभ सुमरहु राम कृपालु॥ १॥

श्रीरघुनाथजीकी आज्ञासे देवराज इन्द्रने अमृत-वर्षा करके सभी वानर-भालुओंको जीवित कर दिया। कृपालु श्रीरामका स्मरण करो, यह शकुन शुभ है॥ १॥

सादर आनी जानकी हनूमान प्रभु पास।
प्रीति परस्पर समउ सुभ सगुन सुमंगल बास॥ २॥

हनुमान्‌जी आदरपूर्वक श्रीजानकीजीको प्रभुके समीप ले आये। यह शकुन सुमङ्गलका निवास है—परस्पर प्रेम रहेगा, समय सुन्दर (सुकाल) रहेगा॥ २॥

सीता सपथ प्रसंग सुभ सीतल भयउ कृसानु।
नेम प्रेम ब्रत धरम हित सगुन सुहावनु जानु॥ ३॥

श्रीजानकीजीके शपथ-ग्रहणका प्रसङ्ग शुभ है, उनके लिये अग्नि शीतल हो गया था। नियम-पालन, प्रेम (भक्ति), व्रत एवं धर्माचरणके लिये शकुन उत्तम समझो॥ ३॥

सनमाने कपि भालु तब सादर साजि बिमानु।
सीय सहित सानुज सदल चले भानु कुल भानु॥ ४॥

सूर्यवंशके सूर्य श्रीरघुनाथजीने सभी वानर-भालुओंका सम्मान किया, फिर आदरपूर्वक पुष्पकविमान सजाकर उसमें श्रीजानकीजी, लक्ष्मणजी तथा अपने दलसहित बैठकर (अयोध्याको) चले॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

हरषत सुर बरषत सुमन, सगुन सुमंगल गान।
अवधनाथु गवने अवध, खेम कुसल कल्यान॥ ५॥

देवता प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं और मङ्गलगान कर रहे हैं। (इस प्रकार) श्रीअयोध्यानाथ (श्रीराम) अयोध्या चले। यह शकुन कुशल-मङ्गल तथा भलाईका सूचक है॥ ५॥ (विदेश गया व्यक्ति सकुशल लौटेगा।)

सिंधु सरोवर सरित गिरि कानन भूमि बिभाग।
राम दिखावत जानकिहि उमगि उमगि अनुराग॥ ६॥

श्रीराम प्रेमकी उमंगमें आकर जानकीको समुद्र, सरोवर, नदियाँ, पर्वत, वन तथा विभिन्न भूभाग दिखला रहे हैं॥ ६॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

तुलसी मंगल सगुन सुभ कहत जोरि जुग हाथ।
हंस बंस अवतंस जय जय जय जानकि नाथ॥ ७॥

तुलसीदास दोनों हाथ जोड़कर कहते हैं—'सूर्यवंशविभूषण श्रीजानकीनाथकी जय हो! जय हो!! जय हो!!!' यह शुभ शकुन मङ्गलकारी है॥ ७॥

सप्तक—२

अवध अनंदित लोग सब ब्योम बिलोकि बिमानु।
नमहुँ कोकनद कोक मन मुदित उदित लखि भानु॥ १॥

आकाशमें विमानको देखकर अयोध्याके सब लोग ऐसे आनन्दित हो रहे हैं, जैसे उदय होते सूर्यको देखकर कमल तथा चकवा पक्षियोंका मन खिल उठता है॥ १॥ (प्रश्न-फल शुभ है, प्रिय मिलन होगा।)

मिले गुरुहि जन परिजनहि, भेंटत भरत सप्रीति।
लखन राम सिय कुसल पुर आए रिपु रन जीति॥ २॥

शत्रुको युद्धमें जीतकर श्रीराम-जानकी और लक्ष्मण कुशलपूर्वक अयोध्या लौट आये। वहाँ गुरुदेवसे, नगरके

लोगोंसे तथा सेवक-सम्बन्धियोंसे मिलकर बड़े प्रेमसे (प्रभु) भरतसे अङ्कमाल देकर मिले॥ २॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

उदबस अवध अनाथ सब अंब दसा दुख देखि।
रामु लखनु सीता सकल बिकल बिषाद बिसेषि॥ ३॥

अयोध्याको अनाथ तथा उजाड़ और सभी माताओंकी दु:खभरी दशा देखकर श्रीराम, लक्ष्मण और जानकीजी—सभी व्याकुल हो गये; उन्हें बहुत दु:ख हुआ॥ ३॥ (प्रियजनोंके दु:खसे शोक होगा।)

मिली मातु हित मीत गुरु सनमाने सब लोग।
सगुन समय बिसमय हरष प्रिय संजोग बियोग॥ ४॥

माताएँ (प्रेमसे) मिलीं; (प्रभुने) हितैषियों, मित्रों तथा गुरुदेव—सभी लोगोंका सम्मान किया। यह शकुन प्रियजनके मिलन एवं वियोगसे होनेवाले हर्ष एवं दु:खका सूचक है॥ ४॥

अमर अनंदित मुनि मुदित मुदित भुवन दस चारि।
घर घर अवध बधावने मुदित नगर नर नारि॥ ५॥

देवता आनन्दमग्न हैं, मुनिगण प्रसन्न हैं, चौदहों भुवन हर्षयुक्त हैं। अयोध्याके घर-घरमें बधाई बज रही है; नगरके पुरुष-स्त्री (सब) प्रसन्न हैं॥ ५॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सुदिन सोधि गुरु बेद बिधि कियो राज अभिषेक।
सगुन सुमंगल सिद्धि सब दायक दोहा एक॥ ६॥

गुरुदेवने शुभ दिनका विचार करके (श्रीरघुनाथजीका) वैदिक विधिसे राज्याभिषेक किया। यह एक दोहा समस्त श्रेष्ठ मङ्गल एवं सिद्धियोंको देनेवाला शकुन है॥ ६॥

भाँति भाँति उपहार लेइ मिलत जुहारत भूप।
पहिराए सनमानि सब तुलसी सगुन अनूप॥ ७॥

राजा लोग नाना प्रकारके उपहार लेकर मिलते और अभिवादन करते हैं। (प्रभुने) सबका सम्मान करके उन्हें वस्त्राभरण पहिनाये। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह अनुपम (मङ्गल) शकुन है॥ ७॥

सप्तक—३

जय धुनि गान निसान सुर बरषत सुरतरु फूल।
भए राम राजा अवध, सगुन सुमंगल मूल॥ १॥

देवता जय-जयकार एवं मङ्गलगान करते, दुन्दुभि बजाते कल्पवृक्षके पुष्पोंकी वर्षा कर रहे हैं, श्रीराम अयोध्या-नरेश हो गये। यह शकुन श्रेष्ठ मङ्गलोंकी जड़ है॥ १॥

भालु बिभीषन कीसपति पूजे सहित समाज।
भली भाँति सनमानि सब बिदा किए रघुराज॥ २॥

श्रीरघुनाथजीने ऋक्षराज जाम्बवन्त, विभीषण तथा वानरराज सुग्रीवका उनके समाजके साथ सत्कार किया, फिर भलीभाँति उन सबको आदरपूर्वक बिदा किया॥ २॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

राम राज संतोष सुख घर बन सकल सुपास।
तरु सुरतरु सुरधेनु महि अभिमत भोग बिलास॥ ३॥

श्रीरामके राज्यमें (सर्वत्र) सुख-सन्तोष है, घरमें तथा वनमें (सब कहीं) सब प्रकारकी सुविधा है। वृक्ष कल्पवृक्षके समान और पृथ्वी कामधेनुके समान मन चाहा भोग-विलास देती है॥ ३॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

राम राज सब काम कहँ, नीक एकही आँक।
सकल सगुन मंगल कुसल, होइहि बारु न बाँक॥ ४॥

श्रीरामका राज्य सब कार्योंके लिये निस्सन्देहरूपसे भला है। यह शकुन सब प्रकार कुशल-मङ्गल करनेवाला है, बाल भी बाँका नहीं होगा (कोई हानि नहीं होगा।)॥ ४॥

कुंभकरन रावन सरिस मेघनाद से बीर।
ढहे समूल बिसाल तरु काल नदी के तीर॥ ५॥

कुम्भकर्ण, रावण तथा मेघनाद-जैसे वीर नदी-किनारेके विशाल वृक्षके समान कालके वेगमें जड़के साथ गिर गये॥ ५॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

सकुल सदल रावन सरिस कवलित काल कराल।
पोच सोच असगुन असुभ, जाय जीव जंजाल॥ ६॥

रावणके समान वीरको कुल तथा सेनाके साथ भयङ्कर कालने अपना ग्रास बना लिया (खा लिया)। यह अपशकुन अशुभ है, हीनता प्राप्त होगी, चिन्ता होगी और संकटमें पड़कर प्राण जायँगे॥ ६॥

अबिचल राज बिभीषनहि दीन्ह राज रघुराज।
अजहुँ बिराजत लंक पुर तुलसी सहित समाज॥ ७॥

महाराज श्रीरघुनाथजीने विभीषणको अविचल (सुस्थिर) राज्य दिया। तुलसीदासजी कहते हैं कि वे अब भी अपने समाजके साथ लङ्कापुरीमें विराजमान हैं॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—४

मंजुल मंगल मोद मय मूरति मारुत पूत।
सकल सिद्धि कर कमल तल, सुमिरत रघुबर दूत॥ १॥

श्रीपवनकुमार आनन्दमय मङ्गलमय मनोहर मूर्ति हैं। उन

श्रीरामदूतका स्मरण करनेसे सब सिद्धियाँ (सफलताएँ) करकमलके नीचे (हाथमें) प्राप्त ही रहती हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल उत्तम है।)

सगुन समय सुमिरत सुखद, भरत आचरनु चारु।
स्वामि धरम ब्रत पेम हित, नेम निबाहनिहारु॥ २॥

श्रीभरतजीका सुन्दर आचरण स्मरण करनेसे सुख देनेवाला है। इस समयका यह शकुन स्वामी (आराध्य) चुनने, धर्माचरण, व्रत, प्रेम (भक्ति) तथा नियम-पालनको सफल करनेवाला समझो॥ २॥

ललित लखन लघु बंधु पद सुखद सगुन सब काहु।
सुमिरत सुभ कीरति बिजय, भूमि ग्राम गृह लाहु॥ ३॥

श्रीलक्ष्मणजीके छोटे भाई शत्रुघ्नजीके सुन्दर चरण स्मरण करनेपर सबके लिये सुखदायी हैं। यह शकुन शुभ है; कीर्ति, विजय, भूमि, ग्राम तथा घरका लाभ होगा॥ ३॥

रामचन्द्र मुख चंद्रमा चित चकोर जब होइ।
राम राज सब काज सुभ समउ सुहावन सोइ॥ ४॥

चित्त जब चकोरके समान श्रीरामचन्द्रजीके मुखरूपी चन्द्रमाका ध्यान करनेवाला बन जाता है, तब वही समय सुहावना (मङ्गलकारी) है। राम-राज्य तो सभी कार्योंके लिये शुभ है ही॥ ४॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

भूमि नंदिनी पद पदुम सुमिरत सुभ सब काज।
बरषा भलि खेती सुफल प्रमुदित प्रजा सुराज॥ ५॥

श्रीभूमिसुता (जानकीजी) के चरण-कमलोंका स्मरण करनेसे सभी कार्य शुभ (फलदायक) हो जाते हैं। (यह शकुन सूचित करता है कि) अच्छी वर्षा होगी, खेती

भलीभाँति फलेगी (फसल अच्छी होगी), प्रजा सुशासन पाकर प्रसन्न रहेगी॥ ५॥

सेवक सखा सुबंधु हित नाइ लखन पद माथु।
कीजिय प्रीति प्रतीति सुभ, सगुन सुमंगल साथु॥ ६॥

श्रीलक्ष्मणजीके चरणोंमें मस्तक झुकाकर सेवक, मित्र तथा अच्छे भाईका हित करो, प्रेम तथा विश्वास रहेगा। यह शुभ शकुन परम हितकारी साथीकी प्राप्ति बतलाता है॥ ६॥

राम नाम रति राम गति राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल तुलसी तुलसीदास॥ ७॥

श्रीरामनाममें प्रेम हो, श्रीरामका ही भरोसा हो, श्रीरामनाममें ही विश्वास हो। इनका स्मरण करनेसे शुभ फल एवं (सब प्रकारसे) मङ्गल होता है, कुशल रहती है। इस स्मरणसे ही तुलसी तुलसीदास हो गया॥ ७॥

सप्तक—५

बिप्र एक बालक मृतक राखेउ राम दुआर।
दंपति बिलपत सोक अति आरत करत पुकार॥ १॥

एक ब्राह्मण (तथा उसकी स्त्री) ने अपना मरा बालक लाकर श्रीरामके द्वारपर रख दिया। पति-पत्नी शोकसे अत्यन्त दुःखी होकर विलाप करते हुए पुकार कर रहे थे॥ १॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

राम सोच संकोच बस सचिव बिकल संताप।
बालक मीचु अकाल भइ राम राज केहि पाप॥ २॥

श्रीरामजी संकोचके कारण चिन्तामें पड़ गये, मन्त्री दुःखसे व्याकुल हो गये कि श्रीरामके राज्यमें किसके पापसे

बालककी असमयमें मृत्यु हुई॥ २॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

बिबुध बिमल बानी गगन, हेतु प्रजा अपचारु।
राम राज परिनाम भल कीजिय बेगि बिचारु॥ ३॥

(उसी समय) आकाशसे निर्मल (स्पष्ट) देववाणी हुई कि इसका कारण प्रजाके किसी व्यक्तिका दूषित आचरण है। शीघ्र विचार कीजिये। 'राम-राज्यमें परिणाम तो उत्तम ही होगा'॥ ३॥ (चिन्ता दूर होगी।)

कोसल पाल कृपाल चित बालक दीन्ह जिआइ।
सगुन कुसल कल्यान सुभ, रोगी उठै नहाइ॥ ४॥

दयालुहृदय श्रीकोसलनाथ रघुनाथजीने (ब्राह्मणके) बालकको जीवित कर दिया। यह शकुन शुभ है, कुशल एवं कल्याणका सूचक है। रोगी नहाकर उठ खड़ा होगा॥ ४॥

बालकु जिया बिलोकि सब कहत उठा जनु सोइ।
सोच बिमोचन सगुन सुभ, राम कृपाँ भल होइ॥ ५॥

(ब्राह्मणके) बालकको जीवित हो उठा देख सब कहने लगे—'मानो यह सोकर उठा है।' यह शुभ शकुन सोचको दूर करनेवाला है, श्रीरामकी कृपासे भलाई होगी॥ ५॥

सिला सुतिय भइ गिरि तरे मृतक जिए जग जान।
राम अनुग्रहँ सगुन सुभ, सुलभ सकल कल्यान॥ ६॥

श्रीरामकी कृपासे पत्थर (अहल्या) सुन्दरी स्त्री हो गयी, पर्वत (समुद्रपर) तैरने लगे और मृतक (बालक) जी उठा—यह संसार जानता है। यह शकुन शुभ है, सभी कल्याण सरलतासे प्राप्त होंगे॥ ६॥

केवट निसिचर बिहँग मृग किए साधु सनमानि।
तुलसी रघुबर की कृपा सगुन सुमंगल खानि॥ ७॥

केवट (निषादराज गुह), राक्षस (विभीषण), पक्षी (जटायु) एवं पशुओं (वानरों) को श्रीरघुनाथजीने कृपा करके आदर देकर सत्पुरुष बना दिया। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह शकुन उत्तम मङ्गलोंकी खान है॥ ७॥

सप्तक—६

राम राज राजत सकल धरम निरत नर नारि।
राग न रोष न दोष दुख, सुलभ पदारथ चारि॥ १॥

श्रीरामके राज्यमें सभी स्त्री-पुरुष धर्माचरणमें लगे हुए शोभित हैं। राग (भोगासक्ति), क्रोध, दोष (कामादि) और दुःख (किसीको) नहीं है; (सबको) चारों पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) सुलभ हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल श्रेष्ठ है।)

खग उलूक* झगरत गए अवध जहाँ रघुराउ।
नीक सगुन बिबरिहि झगर, होइहि धरम निआउ॥ २॥

गीध पक्षी और उल्लू झगड़ा करते हुए अयोध्यामें श्रीरघुनाथजीके पास गये[१]। यह शकुन अच्छा है, झगड़ा सुलझ जायगा, धर्मपूर्वक न्याय होगा॥ २॥

जती-स्वान† संबाद सुनि सगुन कहब जियँ जानि।
हंस बंस अवतंस पुर बिलग होत पय पानि॥ ३॥

यती (संन्यासी) और कुत्तेका संवाद सुनकर[२] अपने

* १. किसी वनमें रहनेवाले गीध और उल्लू एक वृक्षके खोड़रके लिये झगड़ पड़े। दोनों उसे अपना घर बतलाते थे। निर्णय करानेके लिये दोनों अयोध्या आये। रघुनाथजीके पूछनेपर गीधने कहा—'सृष्टिके प्रारम्भमें पृथ्वीपर जबसे मनुष्य बसने लगे, तबसे यह खोड़र मेरे अधिकारमें चला आया है।' उल्लूने बताया—'प्रभो! पृथ्वीपर जबसे वृक्षोंकी उत्पत्ति हुई तबसे मैं उसमें रहता हूँ।' दोनोंकी बात सुनकर श्रीरघुनाथजीने उल्लूको वह खोड़र दिला दिया।

† २. श्रीरामके दरबारमें एक बार एक कुत्ता पहुँचा। उसने कहा—'मुझे

चित्तमें समझकर शकुन बताऊँगा कि सूर्यवंशभूषण श्रीरघुनाथजीके नगर (अयोध्या) में दूध-पानी पृथक् होता (सच्चा न्याय प्राप्त होता) है॥ ३॥ (विवादमें सत्यकी विजय होगी।)

राम कुचरचा करहिं सब सीतहि लाइ कलंक।
सदा अभागी लोग जग, कहत सकोचु न संक॥ ४॥

लोग श्रीजानकीजीको कलङ्क लगाकर श्रीरामकी निन्दा करते हैं। जगत्‌के लोग सदासे अभागे हैं, (ऐसी बात) कहते उन्हें संकोच और शङ्का भी नहीं होती॥ ४॥ (अपयश होगा।)

सती सिरोमनि सीय तजि, राखि लोग रुचि राम।
सहे दुसह दुख सगुन गत प्रिय बियोगु परिनाम॥ ५॥

श्रीरामने सती-शिरोमणि श्रीजानकीजीका त्याग करके लोगोंकी रुचि रखी और स्वयं असहनीय दुःख सहा। इस अपशकुनका फल परिणाममें प्रियजनका वियोग है॥ ५॥

बरन धरम आश्रम धरम निरत सुखी सब लोग।
राम राज मंगल सगुन, सुफल जाग जप जोग॥ ६॥

श्रीरामके राज्यमें सब लोग अपने वर्ण-धर्म और

सर्वार्थसिद्धि नामक ब्राह्मणने निरपराध मारा है।' ब्राह्मण बुलाया गया उसने अपराध स्वीकार कर लिया। वह दरिद्र था, भिक्षा न मिलनेसे भूखा था, क्षुधाकी झुँझलाहटमें उसने कुत्तेको अकारण मारा था। कुत्तेने ही उसके लिये दण्ड चुना कि 'ब्राह्मण कालंजरके मठका मठाधीश बना दिया जाय।' ब्राह्मण मठाधीश बना दिया गया। पूछनेपर कुत्तेने बताया—'मैं पूर्वजन्ममें वहींका मठाधीश था, अत्यन्त सावधानीसे आचरण करता था; किन्तु भूलसे देवांश खा लेनेके कारण मेरी यह गति हुई। यह ब्राह्मण मठाधीश होकर प्रमाद करेगा तो नरकमें ही जायगा।'

आश्रम-धर्ममें लगे हुए हैं, अतएव सुखी हैं। यह शकुन मङ्गलसूचक है; यज्ञ, जप और योग सफल होगा॥ ६॥

बाजिमेध अगनित किए, दिए दान बहु भाँति।
तुलसी राजा राम जग सगुन सुमंगल पाँति॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि महाराज श्रीरामने अगणित अश्वमेधयज्ञ किये और अनेक प्रकारसे दान दिये। संसारमें यह शकुन श्रेष्ठ मङ्गलोंकी परम्पराका द्योतक है॥ ७॥

सप्तक—७

असमंजसु बड़ सगुन गत सीता राम बियोग।
गवन बिदेस कलेस बड़ हानि पराभव रोग॥ १॥

श्रीसीता-रामका वियोग हो जानेसे यह शकुन भारी असमञ्जसका सूचक है। विदेश जाना होगा, बड़ा कष्ट होगा, हानि, पराजय तथा रोगका शिकार बनना होगा॥ १॥

मानिय सिय अपराध बिनु प्रभु परिहरि पछितात।
रुचै समाज न राज सुख, मन मलीन कृस गात॥ २॥

ऐसा मानना (विश्वास करना) चाहिये कि बिना किसी अपराधके श्रीजानकीजीका त्याग करके प्रभु पश्चात्ताप कर रहे हैं। उन्हें समाज (में रहना) तथा राज्यका सुख अच्छा नहीं लगता, चित्त खिन्न रहता है तथा शरीर दुर्बल हो गया है॥ २॥ (प्रश्न-फल निकृष्ट है।)

पुत्र लाभ लवकुस जनम सगुन सुहावन होइ।
समाचार मंगल कुसल सुखद सुनावइ कोइ॥ ३॥

लव-कुशका जन्म पुत्र-प्राप्तिका सूचक शुभ शकुन है। कोई आनन्द-मङ्गलका सुखदायी समाचार सुनायेगा॥ ३॥

राज-सभाँ लवकुस ललित किए राम गुन गान।
राज समाज सगुन सुभ सुजस लाभ सनमान॥ ४॥

लव-कुशने राजसभामें सुन्दर (मधुर) स्वरमें श्रीरामके गुणोंका गान किया। यह शुभ शकुन राज-समाजमें सुयश तथा सम्मानकी प्राप्तिका सूचक है॥ ४॥

बालमीकि लव कुस सहित आनी सिय सुनि राम।
हृदयँ हरषु जानब प्रथम सगुन सोक परिनाम॥ ५॥

महर्षि वाल्मीकि लव-कुशके साथ सीताजीको ले आये हैं, यह सुनकर श्रीरामके चित्तमें प्रसन्नता हुई। इस शकुनका फल यह जानना चाहिये कि मनमें पहिले प्रसन्नता, पर अन्तमें शोक होगा॥ ५॥

अनरथ असगुन अति असुभ सीता अवनि प्रबेसु।
समय सोक संताप भय कलह कलंक कलेसु॥ ६॥

श्रीजानकीजीका पृथ्वीमें प्रवेश कर जाना अनर्थ करनेवाला अत्यन्त अशुभ अपशकुन है। यह शोक, सन्ताप, भय, झगड़े, अपयश और कष्टका समय है॥ ६॥

सुभग सगुन उनचास रस राम चरित मय चारु।
राम भगत हित सफल सब तुलसी बिमल बिचारु॥ ७॥

यह उनचास दोहोंवाला छठा सर्ग रामचरितमय होनेसे (बड़ा ही) सुन्दर है। तुलसीदासजी कहते हैं कि शकुन मङ्गलमय है, रामभक्तोंके लिये प्रत्येक निर्मल (निष्पाप) विचार सफल होगा॥ ७॥

सप्तम सर्ग

सप्तक—१

राम लखनु सानुज भरत सुमिरत सुभ सब काज।
साहित प्रीति प्रतीति हित सगुन सकल सुभ काज॥ १॥

श्रीराम, लक्ष्मण तथा छोटे भाई शत्रुघ्नजीके साथ भरतजीका स्मरण करनेसे सभी कार्य शुभ हो जाते हैं। साहित्य (मेल-जोल), प्रेम और विश्वासकी दृष्टिसे यह शकुन सब कार्योंका शुभ (सफल) होना बतलाता है॥ १॥

सुख मुद मंगल कुमुद बिधु, सगुन सरोरुह भानु।
करहु काज सब सिद्धि प्रभु आनि हिएँ हनुमानु॥ २॥

सुख, आनन्द तथा मङ्गलरूपी कुमुदिनियोंके लिये चन्द्रमाके समान तथा शकुनरूपी कमलोंके लिये सूर्यके समान स्वामी श्रीहनुमान्‌जीको हृदयमें लाकर कार्य करो, सब प्रकारकी सफलता मिलेगी॥ २॥

राज काज मनि हेम हय राम रूप रबि बार।
कहब नीक जय लाभ सुभ सगुन समय अनुहार॥ ३॥

रविवारके दिन श्रीरामके स्वरूपका ध्यान करके राजकार्य, मणि, स्वर्ण एवं घोड़े-सम्बन्धी प्रश्न करो। मैं कहूँगा कि यह शकुन समयानुसार विजय, लाभ, मङ्गल तथा भलाईकी दृष्टिसे शुभ है॥ ३॥

रस गोरस खेती सकल बिप्र काज सुभ साज।
राम अनुग्रहँ सोम दिन प्रमुदित प्रजा सुराज॥ ४॥

रस, गोरस, खेती, ब्राह्मणोंके कार्य तथा शुभ साज-

सजावटके प्रश्न सोमवारको करे। श्रीरामकी कृपासे उत्तम शासन पाकर प्रजा आनन्दित रहेगी॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

मंगल मंगल भूमि हित, नृप हित जय संग्राम।
सगुन बिचारब समय सुभ करि गुरु चरन प्रनाम॥ ५॥

मंगलवारको पृथ्वीके लिये, राजाके लिये, युद्ध (विवाद) में विजयके लिये गुरुदेवके चरणोंमें प्रणाम करके शकुनका विचार समयानुकूल एवं शुभ है, मङ्गलदायक है॥ ५॥

बिपुल बनिज बिद्या बसन बुध बिसेषि गृह काजु।
सगुन सुमंगल कहब सुभ सुमिरि सीय रघुराजु॥ ६॥

अनेक प्रकारके व्यापार, विद्या, वस्त्र तथा विशेषतः घरके कार्योंके लिये श्रीसीता-रामजीका स्मरण करके बुधवारको शकुन बतलाना शुभ है तथा मङ्गलदायी है॥ ६॥

गुरु प्रसाद मंगल सकल, राम राज सब काज।
जज्ञ बिबाह उछाह ब्रत, सुभ तुलसी सब साज॥ ७॥

गुरुदेव (वसिष्ठजी) की कृपासे श्रीरामके राज्यमें सभी कार्योंमें सब प्रकार मङ्गल होता था। तुलसीदासजी कहते हैं कि यज्ञ, विवाह, उत्सव तथा व्रतके लिये गुरुवारको प्रश्न करना सब प्रकार शुभ करनेवाला है॥ ७॥

सप्तक—२

सुक्र सुमंगल काज सब कहब सगुन सुभ देखि।
जंत्र मंत्र मनि ओषधी सहसा सिद्धि बिसेषि॥ १॥

शुक्रवारको सभी मङ्गलकारी कार्योंके लिये शुभ शकुन

देखकर फल बताये। विशेषतः यन्त्र, मन्त्र, मणि, ओषधि (सम्बन्धी कार्य) में (यह दिन) अकस्मात् सफलता देनेवाला है॥ १॥

राम कृपा थिर काज सुभ, सनि बासर बिश्राम।
लोह महिष गज बनिज भल, सुख सुपास गृह ग्राम॥ २॥

शनिवारको सब शुभकार्य बन्द रखे और विश्राम करे। श्रीरामकी कृपासे लोहे, भैंस तथा हाथीके व्यापारमें भला होगा। घर-गाँवमें सुख-सुविधा रहेगी॥ २॥

राहु केतु उलटे चलहिं असुभ अमंगल मूल।
रुंड मुंड पाखंड प्रिय असुर अमर प्रतिकूल॥ ३॥

देवताओंके विरोधी, पाखण्डप्रिय (क्रमशः) केवल सिर और धड़के रूपमें रहनेवाले राक्षस राहु और केतु उलटे ही चलते हैं। वे (तथा यह शकुन) अशुभ हैं, अमङ्गलकी जड़ हैं॥ ३॥

समउ राहु रबि गहनु मत राजहि प्रजहि कलेस।
सगुन सोच, संकट बिकट, कलह कलुष दुख देस॥ ४॥

यह समय सूर्यग्रहण लगनेके समान राजा-प्रजा दोनोंके लिये दुःखदायी है। इस शकुनका फल यह है कि चिन्ता, भारी विपत्ति, झगड़ा, पाप और देशमें दुःख होगा॥ ४॥

राहु सोम संगमु बिषमु, असगुन उदधि अगाधु।
ईति भीति खल दल प्रबल, सीदहिं भूसुर साधु॥ ५॥

राहु और चन्द्रमाका (ग्रहण) योग भयंकर है, अथाह अपशकुनका समुद्र है। अकालादि दैवी उत्पात, भय तथा

दुष्टोंके समूह प्रबल होंगे; ब्राह्मण और सत्पुरुष कष्ट पायेंगे॥ ५॥

सात पाँच ग्रह एक थल चलहि बाम गति धाम।
राज बिराजिय समउ गत सुभ हित सुमिरहु राम॥ ६॥

सातमेंसे पाँच ग्रह* टेढ़ी गतिसे अपने स्थानोंसे एक स्थानके लिये चले हैं। (इस समय) शासन तो समयानुसार विपरीत ही चलेगा, कल्याणके लिये श्रीरामका स्मरण करो॥ ६॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

खेती बनि बिद्या बनिज सेवा सिलिप सुकाज।
तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल राम कें राज॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि रामराज्यमें खेती, मजदूरी, विद्या, वाणिज्य, सेवा, कारीगरी आदि सभी उत्तम कार्य कल्पवृक्षके समान (अभीष्ट) उत्तम फल देते थे॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

सप्तक—३

सुधा साधु सुरतरु सुमन सुफल सुहावनि बात।
तुलसी सीतापति भगति, सगुन सुमंगल सात॥ १॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि अमृत, साधु, कल्पवृक्ष, पुष्प, अच्छे फल, सुहावनी बात और श्रीरघुनाथजीकी भक्ति—ये सात मङ्गलदायक शकुन हैं॥ १॥ (प्रश्न-फल

* ग्रह नौ हैं, जिनमें राहु और केतु अप्रधान माने जाते हैं और उनका वर्णन ऊपर दोहोंमें हो भी चुका। शेष सातमेंसे दो सूर्य और चन्द्र सीधी चालसे चलते हैं तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि—ये वक्री (टेढ़ी गतिवाले) भी होते हैं और उस समय अशुभ माने जाते हैं।

श्रेष्ठ है।)

सिद्ध समागम संपदा सदन सरीर सुपास।
सीतानाथ प्रसाद सुभ सगुन सुमंगल बास॥ २॥

सिद्ध पुरुषोंसे भेंट सम्पत्ति, घर और शरीर (स्वास्थ्य) का सुख देनेवाली है। श्रीसीतानाथकी कृपासे यह शुभ शकुन परम मङ्गलका निवास है॥ २॥

कौसल्या कल्यानमय मूरति करत प्रनामु।
सगुन सुमंगल काज सुभ कृपा करहिं सिय रामु॥ ३॥

कल्याणकी मूर्ति कौसल्याजीको प्रणाम करनेसे श्रीसीता-राम कृपा करते हैं, सभी कार्योंमें परम मङ्गल होता है। यह शकुन शुभ है॥ ३॥

सुमिरि सुमित्रा नाम जग जे तिय लेहिं सुनेम।
सुवन लखन रिपुदवन से पावहिं पति पद प्रेम॥ ४॥

जो नारियाँ दृढ़ नियमपूर्वक संसारमें श्रीसुमित्राजीका नाम लेती (जपती) और उनका स्मरण करती हैं, वे लक्ष्मण और शत्रुघ्नके समान पुत्र तथा पतिके चरणोंमें प्रेम पाती हैं॥ ४॥ (शकुन स्त्रियोंके लिये पुत्र तथा पति-प्रेमकी प्राप्तिका सूचक है।)

दसरथ नाम सुकामतरु फलइ सकल कल्यान।
धरनि धाम धन धरम सुख सुत गुन रूप निधान॥ ५॥

महाराज दशरथका नाम उत्तम कल्पवृक्षके समान है, समस्त कल्याणरूप फल फलता (देता) है। पृथ्वी, घर, धन, धर्म, सुख तथा गुण और रूपके निधान पुत्र प्राप्त होंगे॥ ५॥

कलह कपट कलि कैकई सुमिरत काज नसाइ।
हानि मीचु दारिद दुरित असगुन असुभ अघाइ॥ ६॥

झगड़ा, कपट एवं कलियुगकी मूर्ति कैकेयीका स्मरण करनेसे कार्य नष्ट हो जाता है। यह हानि, मृत्यु, दरिद्रता तथा पापसूचक अत्यन्त अशुभ अपशकुन है॥ ६॥

राम बाम दिसि जानकी लखनु दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुरतरु तुलसी तोर॥ ७॥

श्रीरामजीकी बायीं ओर श्रीजानकीजी और दाहिनी ओर श्रीलक्ष्मणजी हैं, इस छबिका ध्यान सब प्रकार कल्याणमय है। तुलसीदासजी कहते हैं कि (यह ध्यान) तुम्हारे लिये तो कल्पवृक्ष (अर्थात् सभी मनोरथ पूर्ण करनेवाला) है॥ ७॥

सप्तक—४

मध्यम दिन मध्यम दसा मध्यम सकल समाज।
नाइ माथ रघुनाथ पद, जानब मध्यम काज॥ १॥

दिन मध्यम है, दशा मध्यम है, सब समाज (योग) मध्यम हैं, श्रीरघुनाथजीके चरणोंमें मस्तक झुकाकर (प्रणाम करके) कार्य करो, मध्यम फल (विशेष हानि-लाभ नहीं) होगा॥ १॥

हित पर बढ़इ बिरोधु जब, अनहित पर अनुराग।
राम बिमुख बिधि बामगत, सगुन अघाइ अभाग॥ २॥

जब दूसरोंकी भलाईसे (अथवा हितैषीके साथ) विरोध बढ़े, दूसरोंकी बुराईसे (अथवा बुरा चाहनेवालेसे) प्रेम हो

तथा मनुष्य श्रीरामसे मुँह मोड़ ले तो (इसके लिये) विधाता ही उलटे हो गये हैं। यह शकुन भरपूर दुर्भाग्य-से-दुर्भाग्यका सूचक है॥ २॥

कृपनु देइ पाइय परो, बिनु साधन सिधि होइ।
सीतापति सनमुख समुझि जो कीजिअ सुभ होइ॥ ३॥

जब कृपण कुछ दे, कहीं पड़ा हुआ (धन या सामान) मिल जाय अथवा बिना किसी साधनके सफलता प्राप्त हो तो श्रीरघुनाथजीको अनुकूल समझो जो कुछ (इस समय) किया जायगा, शुभ होगा॥ ३॥

पहिलें हित परिनाम गत, बीच बीच भल पोच।
सगुन कहब अस राम गति कहबि समेत सकोच॥ ४॥

(अत्यन्त) संकोचपूर्वक मैं शकुनका फल यह कहूँगा अथवा श्रीरामकी गति (इच्छा) ही ऐसी कहूँगा कि (पूछे गये कार्यमें) पहिले भलाई होगी, किन्तु अन्तिम फल बुरा होगा और बीच-बीचमें अच्छाई-बुराई दोनों आती रहेंगी॥ ४॥

रमा रमापति गौरि हर सीता राम सनेहु।
दंपति हित संपति सकल, सगुन सुमंगल गेहु॥ ५॥

श्रीलक्ष्मी-नारायण, गौरी-शंकर तथा सीता-राममें प्रेम समस्त सम्पत्ति देनेवाला है। दम्पतिके लिये यह शकुन श्रेष्ठ मङ्गलका घर है॥ ५॥

प्रीति प्रतीति न राम पद, बड़ी आस बड़ लोभ।
नहिं सपनेहुँ संतोष सुख, जहाँ तहाँ मन छोभ॥ ६॥

श्रीरामके चरणोंमें प्रेम और विश्वास है नहीं, बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं, बड़ा लोभ है। (फलतः) स्वप्नमें भी सन्तोष और सुख नहीं मिलेगा, जहाँ-तहाँ (सर्वत्र) मनमें अशान्ति रहेगी॥ ६॥ (प्रश्न-फल अशुभ है।)

पय नहाइ फल खाइ जपु राम नाम षट मास।
सगुन सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास॥ ७॥

पयस्विनी नदीमें स्नान करके, फल खाकर छः महीने राम-नामका जप करो। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह शकुन (यह साधन भी) परम मङ्गलदायक है, सभी सिद्धियाँ (सफलताएँ) हाथमें आयी हुई समझो॥ ७॥

सप्तक—५

बड़ कलेस कारज अलप, बड़ी आस लहु लाहु।
उदासीन सीता रमन, समय सरिस निरबाहु॥ १॥

बड़ा कष्ट उठानेपर थोड़ा-सा कार्य होगा, बड़ी आशा होगी, किन्तु लाभ थोड़ा होगा। श्रीसीतानाथ प्रभुकी ओरसे उदासीनता रहेगी, समयके अनुसार (किसी प्रकार) निर्वाहमात्र हो जायगा॥ १॥

दस दिसि दुख दारिद दुरित, दुसह दसा दिन दोष।
फेरे लोचन राम अब, सनमुख साज सरोष॥ २॥

श्रीरामके अब नेत्र फेर लेने (उदासीन हो जाने) से दसो दिशाओंमें (सर्वत्र) दुःख, दरिद्रता, पाप, असहनीय दशा प्राप्त होगी। दिनोंका दोष (दुर्भाग्य) क्रोध करके साज सजाकर सामने आ गया है॥ २॥

खेती बनिज न भीख भलि, अफल उपाय कदंब।
कुसमय जानब बाम बिधि, राम नाम अवलंब॥ ३॥

(इस समय) न खेती करना अच्छा, न व्यापार करना और न भीख माँगना। सभी उपाय असफल होंगे, अभी बुरा समय आया समझो, विधाता प्रतिकूल है। (इस समय) राम-नाम ही (एकमात्र) सहारा है॥ ३॥

पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम।
सुलभ सिद्धि सब सगुन सुभ, सुमिरत सीताराम॥ ४॥

श्रीसीता-रामके स्मरणसे स्वार्थके लिये किये गये मनुष्यके सभी प्रयत्न परमार्थमें परिणत हो जाते हैं तथा सभी सिद्धियाँ सुलभ हो जाती हैं। यह शकुन शुभ है॥ ४॥

भागु भाग तजि भाल थलु, आलस ग्रसे उपाउ।
असुभ अमंगल सगुन सुनि, सरन रामकें आउ॥ ५॥

भाग्य ललाटका स्थान छोड़कर भाग गया है (सौभाग्यका समय रहा नहीं)। उपायोंको आलस्यने ग्रस्त कर लिया है। (प्रयत्न समयपर हो नहीं सकेगा।) अमङ्गलकारी यह अशुभ शकुन सुनकर (अब) श्रीरामकी शरणमें आ जाओ (वे ही रक्षा करनेमें समर्थ हैं।)॥ ५॥

गइ बरषा करषक बिकल, सूखत सालि सुनाज।
कुसमय कुसगुन कलह कलि, प्रजहि कलेसु कुराज॥ ६॥

वर्षा चली जानेसे भली प्रकार जमा हुआ धान सूख रहा है, किसान व्याकुल हो रहे हैं। यह अपशकुन बतलाता है कि बुरा समय रहेगा, लड़ाई-झगड़ा होगा, बुरे शासनके कारण प्रजाको कष्ट होगा॥ ६॥

तुलसी तुलसी राम सिय, सुमिरहु लखन समेत।
दिन दिन उदउ अनंद अब, सगुन सुमंगल देत॥ ७॥

तुलसीदासजी (अपने-आपसे) कहते हैं—तुलसीका तथा श्रीराम-जानकी एवं लक्ष्मणका स्मरण करो। अब दिनोदिन अभ्युदय एवं आनन्द होगा। यह शकुन परम मङ्गलदायक है॥ ७॥

सप्तक—६

उदबस अवध नरेस बिनु, देस दुखी नर नारि।
राज भंग कुसमाज बड़, गत ग्रह चाल बिचारि॥ १॥

महाराज (दशरथ) के बिना अयोध्या उजाड़ हो गयी है, देशके सभी स्त्री-पुरुष दुःखी हैं। ग्रहोंकी गतिका विचार करके (इस शकुनका फल) जान पड़ता है कि राज्यका नाश होगा तथा बुरे लोगोंका समूह बढ़ेगा॥ १॥

अवध प्रबेस अनंदु बड़, सगुन सुमंगल माल।
राम तिलक अवसर कहब सुख संतोष सुकाल॥ २॥

(श्रीरामका) अयोध्यामें प्रवेश होनेपर बड़ा आनन्द हुआ। श्रीरामके राजतिलकके समयको मैं सुख, सन्तोष और सुकाल (सुभिक्ष) का सूचक कहूँगा। यह शकुन परम मङ्गलकी परम्परारूप (अत्यन्त मङ्गलदायी) है॥ २॥

राम राज बाधक बिबुध, कहब सगुन सतिभाउ।
देखि देवकृत दोष दुख, कीजिय उचित उपाउ॥ ३॥

श्रीरामके राज्याभिषेकमें देवता बाधक हुए। इस शकुनका सच्चा भाव मैं यही कहूँगा कि देवताओंके द्वारा रचित (आधिदैविक) दोष और दुःख (की प्राप्ति) देख (समझ) कर उचित उपाय (पूजा-पाठ आदि) करना चाहिये॥ ३॥

मंद मंथरा मोह बस कुटिल कैकई कीन्ह।
ब्याधि बिपति सब देवकृत समयँ सगुन कहि दीन्ह॥ ४॥

नीच मंथराने मोहके वश होकर रानी कैकेयीको (अपनी बातोंसे) कुटिल बना दिया। इस शकुनने बता दिया कि देवताओंद्वारा रचित (आधिदैविक) सम्पूर्ण रोग तथा विपत्तियाँ समयपर आयेंगी॥ ४॥

राम बिरहँ दसरथ दुखित, कहति कैकई काकु।
कुसमय जाय उपाय सब, केवल करम बिपाकु॥ ५॥

महाराज दशरथ श्रीरामके विरहमें दुःखी हैं, (इसपर भी) कैकेयी व्यंग वचन कहती है। बुरा समय आया है, सारे उपाय निष्फल होंगे, केवल कर्मका फल (भाग्यसे प्राप्त कष्ट) रहेगा (उसे भोगना ही होगा)॥ ५॥

लखन राम सिय बसत बन, बिरह बिकल पुर लोग।
समय सगुन कह करम बस दुख सुख जोग बियोग॥ ६॥

श्रीराम-जानकी और लक्ष्मणजी वनमें निवास करते हैं, नगरके लोग उनके वियोगमें व्याकुल हैं। इस समय यह शकुन बतलाता है कि प्रारब्धानुसार दुःख-सुख तथा प्रियजनोंसे मिलन और वियोग प्राप्त होगा॥ ६॥

तुलसी लाइ रसाल तरु निज कर सींचति सीय।
कृषी सफल भल सगुन सुभ समउ कहब कमनीय॥ ७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि आमके वृक्ष लगाकर श्रीजानकीजी अपने हाथसे उन्हें सींचती हैं। इसपर हम यही कहेंगे कि यह शकुन शुभ है—खेती अच्छी फल देगी, भलाई होगी, समय सुन्दर (सुकाल) होगा॥ ७॥

सप्तक—७

सुदिन साँझ पोथी नेवति, पूजि प्रभात सप्रेम।
सगुन बिचारब चारु मति, सादर सत्य सनेम॥ १॥

(अब शकुन-विचारकी विधि बतला रहे हैं—) किसी शुभ दिन संध्याके समय पुस्तकको निमन्त्रण देकर (कि कल आप मुझे मेरे प्रश्नका उत्तर देनेकी कृपा करें) प्रातः-काल प्रेमपूर्वक उसकी पूजा करके बुद्धिमान् पुरुषको आदरपूर्वक शकुनको सत्य मानकर (ग्रन्थके प्रारम्भमें भूमिकामें बताये) नियमोंके अनुसार शकुनका विचार करना चाहिये॥ १॥ (यदि प्रश्न करनेपर यही दोहा निकले तो वह प्रश्न फिर करना चाहिये।)

मुनि गनि दिन गनि धातु गनि दोहा देखि बिचारि।
देस करम करता बचन सगुन समय अनुहारि॥ २॥

मुनि (सात), दिन (सात) तथा धातु (सात) अर्थात् सात सर्ग; प्रत्येक सर्गके सात-सात सप्तक तथा प्रत्येक सप्तकके सात-सात दोहे गिनकर, दोहेको देखकर फलका विचार करो। देश, कर्म तथा प्रश्नकर्ताके वचनके अनुसार उस समय शकुन होगा॥ २॥ (जैसे शब्दोंमें प्रश्न पूछा गया है, जिस कर्मके सम्बन्धमें पूछा गया है, जिस समय और जिस स्थानमें पूछा गया है, सबका प्रभाव देखकर प्रश्नका फल कहना चाहिये। यदि यही दोहा प्रश्न करनेपर निकले तो फिर वही प्रश्न करना तथा फल देखना चाहिये।)

सगुन सत्य ससि नयन गुन, अवधि अधिक नयवान।
होइ सुफल सुभ जासु जसु, प्रीति प्रतीति प्रमान॥ ३॥

चन्द्रमा (एक), नेत्र (दो), गुण (तीन)—नीतिमान्के लिये सच्चे शकुनकी यह अधिक-से-अधिक सीमा है। (एक दिन तीनसे अधिक प्रश्न न करे।) जिसका जैसा प्रेम और विश्वास है, उसीके अनुसार शकुन शुभ तथा सफल होगा॥ ३॥ (प्रश्न-फल मध्यम है।)

गुरु गनेस हर गौरि सिय राम लखन हनुमान।
तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन बिचार बिधान॥ ४॥

तुलसीदासजी कहते हैं—गुरुदेव, गणेश, श्रीगौरी-शंकर, श्रीसीता-राम तथा लक्ष्मणजी और हनुमान्जीका आदरपूर्वक स्मरण करके सब प्रकारके शकुनका विधिपूर्वक विचार करना चाहिये॥ ४॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)

हनूमान सानुज भरत राम सीय उर आनि।
लखन सुमिरि तुलसी कहत सगुन बिचारु बखानि॥ ५॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि (पहिले) श्रीहनुमान्जी, छोटे भाई शत्रुघ्नके साथ, भरतजी, श्रीसीतारामजी और लक्ष्मणजीको हृदयमें ले आओ; इनका स्मरण करके तब शकुनका विचार करके फल बताओ॥ ५॥ (फल उत्तम है।)

जो जेहि काजहि अनुहरइ, सो दोहा जब होइ।
सगुन समय सब सत्य सब, कहब राम गति जोइ॥ ६॥

जो जिस कार्यके लिये प्रश्न करता है, वही उसी (कार्यसम्बन्धी) दोहा जब हो, तब उस शकुनके समय जो पूछा गया है, वह सब पूर्ण सत्य होगा। श्रीरामजीकी

गति (इच्छा-कृपा) पर भरोसा करके (प्रश्नफल) कहना चाहिये॥ ६॥ (प्रश्न-फल सन्दिग्ध है।)

गुन बिस्वास बिचित्र मनि सगुन मनोहर हारु।
तुलसी रघुबर भगत उर बिलसत बिमल बिचारु॥ ७॥

तुलसीदासने विश्वासरूपी तागेमें शकुनरूपी विचित्र मणियोंकी यह मनोहर माला बनायी है। श्रीरघुनाथजीके भक्तोंके हृदयपर यह निर्मल विचारके रूपमें शोभित होती है। (श्रीरामभक्तोंके हृदयमें यह शकुन-विचार विराजमान रहता है।) ॥ ७॥ (प्रश्न-फल शुभ है।)



गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित श्रीरामचरितमानसके विभिन्न संस्करण

कोड-नं०	संस्करण
80	श्रीरामचरितमानस-बृहदाकार (हिन्दी-टीकासहित) बहुत बड़े अक्षरोंमें
81	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (हिन्दी-टीकासहित) बड़े अक्षरोंमें
82	श्रीरामचरितमानस-मझला (हिन्दी-टीकासहित) सामान्य अक्षरोंमें
83	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (केवल मूल) मोटे अक्षरोंमें
84	श्रीरामचरितमानस-मझला (केवल मूल) सामान्य संस्करण
85	श्रीरामचरितमानस-गुटका (केवल मूल)
697	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (हिन्दी-टीकासहित) सामान्य अक्षरोंमें
790	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (केवल हिन्दी अनुवाद) मोटे अक्षरोंमें
1095	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (हिन्दी-टीकासहित) राजसंस्करण
1282	श्रीरामचरितमानस-मझला (केवल मूल) राजसंस्करण

कोड-नं०	अन्य भाषाओंमें प्रकाशित श्रीरामचरितमानसके विभिन्न संस्करण
1318	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (रोमन, अंग्रेजी अनुवादके साथ)
786	श्रीरामचरितमानस-मझला (अंग्रेजी अनुवाद)
1314	श्रीरामचरितमानस-ग्रंथाकार (मराठी-टीकासहित)
799	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (मूल एवं टीका) गुजराती, बड़े अक्षरोंमें
785	श्रीरामचरितमानस-मझला (मूल एवं टीका) गुजराती
878	श्रीरामचरितमानस-मझला (केवल मूल) गुजराती, सामान्य अक्षरोंमें
879	श्रीरामचरितमानस (केवल मूल)-गुटका, गुजराती
954	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (मूल एवं टीका) बँगला, बड़े अक्षरोंमें
1218	श्रीरामचरितमानस (केवल मूल) ओडिआ, बड़े अक्षरोंमें

श्रीरामचरितमानसके अलग-अलग काण्ड सटीक एवं सुन्दरकाण्डके अन्य भारतीय भाषाओंमें विभिन्न संस्करण भी उपलब्ध हैं।

श्रीरामचरितमानस-सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मानस-पीयूष (कोड-नं० 86) सात खण्डोंमें—श्रीरामचरितमानसकी विस्तृत टीका (सम्पादक—श्रीअञ्जनीनन्दनशरण) अनेक मानस-तत्त्वान्वेषकों, विभिन्न संत-महात्माओं तथा अन्यान्य सुप्रसिद्ध कथावाचकोंके द्वारा प्रस्तुत श्रीरामचरितमानसके गूढ़तम भावोंका सुन्दर संकलन।

'मानस-गूढ़ार्थ-चन्द्रिका' हिन्दी-टीका (सात खण्डोंमें) कोड-नं० 1322 (टीकाकार—प० प० दण्डी स्वामी श्रीप्रज्ञानानन्दजी सरस्वती), श्रीरामचरितमानसपर एक नवीन प्रकाशन—मानस-पीयूषकी भाँति श्रीरामचरितमानसके आध्यात्मिक अर्थ, योगपरक अर्थ, शंका-समाधान, तात्त्विक-चर्चा आदि अनेक गूढ़ विषयोंका सुन्दर प्रतिपादन।

मानसमें नाम-वन्दना (कोड-नं० 401), **मानस-रहस्य** (कोड-नं० 103), **मानस-शंका-समाधान** (कोड-नं० 104), भी उपलब्ध।

गोस्वामी श्रीतुलसीदासकृत अन्य साहित्य

105	विनय-पत्रिका	(सरल भावार्थसहित)
106	गीतावली	(" ")
107	दोहावली	(" ")
108	कवितावली	(" ")
109	रामाज्ञाप्रश्न	(" ")
110	श्रीकृष्णगीतावली	(" ")
111	जानकीमंगल	(सरल भावार्थसहित)
112	हनुमानबाहुक	(" ")
113	पार्वतीमंगल	(" ")
114	वैराग्य-संदीपनी एवं बरवै रामायण	(" ")